Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुक्खंति दुक्खी
इह दुक्कडेणं।

अपने दुष्कृत से दुःखी बना हुआ प्राणी दुःख का ही अनुभव करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 12 • 26 दिसंबर, 2022 - 1 जनवरी 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 24-12-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

चतुर्थ आचार्य श्रीमद्जयाचार्य की जन्म भूमि में आचार्यश्री महाश्रमण जी का पदार्पण

हमें परमप्रभु पार्श्वनाथ से वीतरागता की प्रेरणा मिले : आचार्यश्री महाश्रमण

रोहट, १८ दिसंबर, २०२२

पाली जिले का एक गाँव रोहट, जहाँ हमारे धर्मसंघ के चतुर्थाचार्य जयाचार्य का जन्म हुआ था, जयाचार्य के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी का आज प्रातः पधारना हुआ। जयाचार्य के शासनकाल में तेरापंथ के विकास के नए-नए आयाम जुड़े हैं। कितना उन्होंने ग्रंथों का निर्माण किया था।

महामनीषी आचार्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जिनों, वीतरागों को नमस्कार है, जिन्होंने भय को जीत लिया है। हमारी दुनिया में अध्यात्म के अधिकृत प्रवक्ता तीर्थंकर होते हैं। जैन शासन में चौबीस तीर्थंकरों की एक व्यवस्था है। हर अवसर्पिणी काल और उत्सर्पिणी काल में २४-२४ तीर्थंकर भरत-ऐरावत क्षेत्र में होते हैं।

तीर्थंकर २४ ही क्यों? तो फिर दिन-रात में घंटे २४ क्यों? ऐसा ही क्रम है। कालचक्र के १२ अर ही क्यों तो घड़ी के भी १२ अक्षर क्यों? ये सभी शाश्वत नियम है। इस अवसर्पिणी काल में २३वें तीर्थंकर पुरुषादानीय भगवान पार्श्व हुए हैं। २४ तीर्थंकरों में ये पुरुषादानीय अलंकरण-विशेषण केवल भगवान पार्श्व के लिए ही आता है।

इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि पुरुषादानीय, पुरुषों के लिए ग्रहणीय, लोकप्रिय तीर्थंकर हो जाते हैं। आज भी देखें कि पूरे भारत में २४ तीर्थंकरों के जितने मंदिर भगवान पार्श्व के मिलते हैं, संभवतः और २३ तीर्थंकरों में से किसी के भी उतने मंदिर नहीं मिलते हैं। जनता में भगवान पार्श्व के प्रति विशेष भाव है।

जितने स्तोत्र-मंत्र भगवान पार्श्व से जुड़े हुए मिलते हैं, संभवतः उतने स्तोत्र अन्य तीर्थंकरों से संबंध नहीं मिलते हैं। कल्याण मंदिर स्तोत्र, उवस्सग्गहर स्तोत्र जैसे कितने स्तोत्र-मंत्र हैं।

आज पार्श्व तीर्थंकर की जन्म जयंती पौष कृष्णा दशमी है। हम वीतराग परम प्रभु पार्श्व से प्रेरणा लें कि वीतरागता की प्रेरणा हमें मिले। भगवान पार्श्व नागराज से भी जुड़े हुए हैं। कुमार पार्श्व की प्रेरणा से एक नाग-नागिन का जोड़ा धरणेंद्र-पद्मावती के रूप में देवगति में प्रतिष्ठित है।

हमारी दुनिया में तीर्थंकरों अभाव कमी नहीं होता, ये मानो दुनिया का सौभाग्य है। हम प्रभु पार्श्व की अभिवंदना श्रद्धा के साथ करें। 'प्रभु पार्श्व देव चरणों में शत-शत प्रणाम हो'। गीत का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर ने करवाया। अनन्य भक्ति इस गीत में गुरुदेव तुलसी ने उड़ेल दी है। उवस्सग्गहर स्तोत्र का भी पाठ करवाया।

आज हम रोहट में आए हैं। रोहट में पहली बार आने की बात है। हमारे धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य के जन्म स्थल के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। जयाचार्य महापुरुष थे। एक श्रुतधर प्रज्ञा पुरुष आचार्य थे। एक छोटा-सा बालक हमारे धर्मसंघ को प्राप्त हुआ। कितने ज्ञानी, आगमज्ञ, सिद्धांतज्ञ बन गए। उनका साहित्य भी कितना है। राजस्थानी भाषा को समृद्ध बनाने में मानो श्रीमद् जयाचार्य का बड़ा योगदान संभवतः माना जा सकता है। वे एक तत्त्ववेत्ता आचार्य और आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों के भाष्यकार प्रवक्ता के रूप में थे। भिक्षु स्वामी के महाप्रयाण के एक माह बाद ही जयाचार्य का जन्म हो गया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अच्छे वक्ता को सुनकर श्रोता भी वक्ता बन सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

कंकाणी, १९ दिसंबर, २०२२

आज प्रातः परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पाली जिले का प्रवास संपन्न कर जोधपुर जिले में मंगल प्रवेश किया। लगभग १५ किलोमीटर का विहार कर परम पावन कंकाणी के पार्श्वनाथ तीर्थ धाम में पधारे। जोधपुर के श्रावक समाज ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

शांतिदूत ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच कर्मेंद्रियाँ हैं। श्रोत, चक्षु, घ्राण, रसन, स्पर्शन ये पाँच ज्ञानेंद्रियाँ हैं, तो हाथ-पाँव आदि पाँच कर्मेंद्रियाँ भी हैं। श्रोत और चक्षु–ये दो इंद्रियाँ ज्ञान की सशक्ततम माध्यम प्रतीत हो रही हैं। हम सुनकर और आँखों से देखकर कितना जान लेते हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 दिसंबर, 22-1 जनवरी, 23

✦ *कार्य की दृष्टि से व्यस्त रहना अच्छा है, पर व्यस्तता हमारे दिमाग में नहीं होनी चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

कषाय और योग के कारण होता है कर्मों का बंधन : आचार्यश्री महाश्रमण

पाली मारवाड़, १६ दिसंबर, २०२२

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी का आज पाली नगर में दूसरे दिन का प्रवास। मुख्य प्रवचन में परम पूज्य ने अमृत प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हम शरीरधारी हैं। जो भी प्राणी होता है, वो शरीरधारी होता ही है। आत्मा एक जन्म पूरा करके अगले जन्म में जाती है, बीच में जो मार्ग है, वहाँ भी शरीर रहता है। स्थूल शरीर नहीं रहता। सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्मतर शरीर ये दो शरीर तो अंतराल गति में भी रहते हैं।

पाँच शरीर बताए गए हैं—औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस और कार्मण शरीर। वर्तमान में हमारे में तेजस और कार्मण के साथ औदारिक शरीर भी है। जहाँ स्थूलधारी शरीर होता है वहाँ प्रवृत्ति भी होती है। मनुष्य जन्म में प्रवृत्ति तो एक तरह से अनिवार्य है। प्रवृत्ति है, तो कर्मों का बंधन भी होता है।

कर्मों का बंधन न हो और जीवन भी चलता रहे, ऐसा कोई उपाय है क्या? उसका एक छोटे से अंश वाला उपाय है—अनासक्ति। रहो भीतर, जीओ बाहर। सघन बंधन आसक्ति से होता है। अनासक्त चेतना है, तो बंधन होगा तो भी हल्का-फुल्का होगा। कर्मों के बंधन में दो तत्त्वों का योग है—कषाय और योग।

योग तो प्रवृत्ति है। कषाय जितना ज्यादा होता है, पाप का बंधन हो सकता है। राग-द्वेष मुक्त प्रवृत्ति है, वहाँ बंधन होगा तो हल्का होगा। ११-१२-१३वें गुणस्थान में बिलकुल कषाय नहीं होता, केवल योग मान्य है। केवलज्ञानी साधु पाप का भागी नहीं होता।

राग-द्वेष का भाव बंधन का कारण है, तो राग-द्वेष मुक्त भाव मोक्ष का कारण हो सकता है। साधु तो राग-द्वेष मुक्त ही होते हैं। यह एक प्रसंग से समझाया कि साधु के मेरा कुछ नहीं होता है। साधु तो अकिंचन होता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र साधु का होता है और कुछ नहीं। साधु तो अणगार होता है, संजोग से विमुक्त होता है। हम अनासक्ति की साधना करें। गार्हस्थ्य में भी अनासक्त रहने का प्रयास करें।

पाली की जनता में अच्छी धर्मोद्योत की लौ जलती रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तेयुप मंत्री पीयूष चोपड़ा, महिला मंडल गीत, सुबुद्धि समदड़िया, दक्ष बांठिया (किशोर मंडल), उषा मरलेचा (तेममं), अंतिमा बड़ेरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि तत्त्वरुचि जी, मुनि संभव कुमार जी एवं साध्वी सिद्धप्रभा जी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि पाली में तो आज दिवाली है।

पूज्यप्रवर ने पाली तेममं द्वारा स्वीकृत संकल्पों के संकल्प स्वीकार करवाए।

अच्छे वक्ता को सुनकर श्रोता भी वक्ता बन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आदमी सुनकर कल्याण और पाप दोनों को जान लेता है। जानने के बाद जो हितकर है, कल्याणकर है, उसका स्वीकार कर आचरण करना चाहिए। बुरा न सुने, न देखें और न ही बोलें नहीं सोचें। श्रवण शक्ति का दुरुपयोग न हो। हितकर बात को सुन लें, ग्रहण कर लें।

अच्छे वक्ता को सुनने से श्रोता अच्छा वक्ता बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। श्रवण के साथ मनन भी हो जाए फिर आचरण में लाने का प्रयास करे। श्रोता तीन तरह के हो सकते हैं—सुनने वाला श्रोता, सोता नींद लेने वाला और सरोता कि कहाँ वक्ता की गलती निकालूँ।

हम श्रवण करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। साधु की पर्युपासना करने से सुनने को मिलता है। सुनने से ज्ञान, ज्ञान से विशेष ज्ञान, विशेष ज्ञान से प्रत्याख्यान का लाभ हो सकता है, फिर आगे अनाश्रव, तप, कर्मों की निर्जरा होते-होते मोक्ष तक की प्राप्ति हो सकती है।

हम जोधपुर के आसपास आए हैं। जोधपुर तेरापंथ के नामकरण से संबद्ध क्षेत्र है। गुरुदेव तुलसी का चातुर्मास हुआ था। संतों का विचरण होना दुनिया के सौभाग्य की बात है। दुनिया में साधनाशील, ज्ञानी संत पुरुष का मिलना बड़ी बात है। संत समागमन होना विशेष बात है।

सुनने के बाद श्रद्धा और आचरण अच्छा हो जाए तो बेड़ा पार हो सकता है। सुनने वाला सलक्ष्य सुने यह एक प्रसंग से समझाया कि व्याख्यान श्रवण में जागरूकता रहे। जीना हो तो पूरा जीना, मरना हो तो पूरा मरना। बहुत बड़ा है कष्ट जगत में, आधा जीना, आधा मरना। जीवन में समय के प्रति भी जागरूकता रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में लूणी के प्रधान हनुमानसिंह राजपुरोहित स्थानीय सरपंच हीराराम विश्नोई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमार श्रमण जी ने किया। मुनि योगेश कुमार जी ने समझाया कि हमारे आप्त पुरुष द्वारा बताए मार्ग पर हम चलें।

✦ तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुँचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।
— आचार्यश्री महाश्रमण

हमें परमप्रभु पार्श्वनाथ से वीतरागता की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पाली जिला तो हमारे धर्मसंघ के लिए ऐतिहासिक है। शेयर, खैरवा, कंटालिया, सिरियारी, बगड़ी आदि कई क्षेत्र हैं। जयाचार्य का स्मृति स्थल भी देखने को मिला। सर्कल भी बना हुआ है। आज हम हमारे धर्मसंघ के परम पूजनीय श्रीमद् जयाचार्य से संबद्ध स्थान में आए हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि रोयट अपने आपमें सौभाग्यशाली है कि इसने एक कोहिनूर दिया, जिसने तेरापंथ की आभा को बढ़ाया। जयाचार्य का जीवन बहुआयामी था। वे सचमुच एक स्थिर योगी थे। जयाचार्य के जीवन के अनेक प्रसंग हैं। उन्होंने जो हमारे धर्मसंघ को दिया है, वो चिरस्थायी बना रहे।

प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस पर जप आयोजन

गंगाशहर।

मुनि श्रेयांस कुमार जी, मुनि विमल विहारी जी और मुनि प्रबोध कुमार जी के सान्निध्य में प्रभु पार्श्व जन्म कल्याण दिवस के अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा २० मिनट तक जप आयोजन किया गया।

जिसमें २२५ से अधिक ज्ञानार्थियों ने मुनिश्री के सान्निध्य में जप किया। जिसमें सभा गंगाशहर के मंत्री रतनलाल छलानी, ज्ञानशाला सह-प्रभारी चैतन्य रांका, मुख्य प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा, रुचि छाजेड़, सुनीता डोसी, सरिता आंचलिया, रक्षा बोथरा, शीतल नाहटा, गरिमा भंसाली, भाविका सामसुखा, तेरापंथ किशोर मंडल से रौनक भंसाली ने इसमें सहयोग किया। सभी बच्चों ने इसमें उत्साह से भाग लिया।

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

लाडनूं।

पोरवाल चेरिटेबल ट्रस्ट, भिलाई एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, बगड़ी के संयुक्त तत्त्वावधान तथा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन विज्ञान विभाग के निर्देशन में महासती चंदनबाला जैन राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बगड़ीनगर में आयोजित 'जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला' का समापन साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के सान्निध्य में हुआ। इससे पूर्व विद्यालयी छात्राओं द्वारा आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण स्थल से पिरामिड आकार में निर्मित भिक्षु त्याग चेतना केंद्र होते हुए तेरापंथ भवन तक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के स्वागत में उत्साहपूर्वक अणुव्रत जीवन-विज्ञान जागरूकता रैली निकाली गई। रैली के संचालन में विद्यालय की शिक्षिका सुनीता राठौड़ का भरपूर सहयोग मिला।

इस अवसर पर साध्वी वीरप्रभा जी ने कहा कि हमें जीवन में सदैव अच्छा बनने का प्रयास करते रहना चाहिए। जीवन विज्ञान जीवन जीने की कला सिखाता है। इसके छोटे-छोटे प्रयोगों से हम अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। उन्होंने एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति के विकास हेतु दीर्घश्वास प्रेक्षा के अभ्यास की प्रेरणा देते हुए महाप्राण ध्वनि का अभ्यास भी करवाया।

प्रशिक्षण क्रम के अंतर्गत कक्षा ६ से १२ तक की सभी छात्राओं को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान तथा कक्षा कक्ष में जीवन विज्ञान के लघु प्रयोगों का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण कार्य में जीवन विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा एवं जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के उज्जैन क्षेत्रीय संयोजक मुकेश मेहता का महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए पोरवाल चेरिटेबल ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी दानमल पोरवाल ने कहा कि आज विद्यार्थियों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास तो हो रहा है परंतु मानसिक एवं भावात्मक विकास पर पर्याप्त बल नहीं दिए जाने के कारण व्यक्तित्व का असंतुलित विकास हो रहा है। उन्होंने जीवन में अर्थ के महत्त्व को बताते हुए कहा कि भौतिक धन-संपदा का महत्त्व तो है परंतु आध्यात्मिक संपदा के सामने यह गौण है। जीवन विज्ञान के अंतर्गत करवाए जाने वाले ध्यान के प्रयोगों से हमें आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करने का अवसर प्राप्त होता है साथ ही हम अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि मैं भी बगड़ीनगर का मूल निवासी हूँ और इसी विद्यालय प्रांगण में मेरी प्राथमिक शिक्षा पूरी हुई थी इसलिए इस विद्यालय के साथ मेरा भावात्मक जुड़ाव भी है।

विद्यालय प्राचार्य सुरेशचंद्र बोराणा ने साध्वीश्री, आयोजक एवं प्रशिक्षकद्वय के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि निश्चित रूप से जीवन विज्ञान के इन प्रयोगों का लाभ हमारे विद्यालय को प्राप्त होगा। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि प्रार्थना सभा में यथासंभव इन प्रयोगों को जारी रखा जाएगा। प्रशिक्षण में वरिष्ठ अध्यापक कालूसिंह चौहान, तेजाराम प्रजापत, सुमेरसिंह, पुष्पाकंवर आदि सभी शिक्षकों की उपस्थिति एवं सहयोग रहा।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी व मुनि नरेश कुमार जी एवं साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के चातुर्मास संपन्नता एवं आगामी विहारों के उपलक्ष्य में आयोजित दोनों मंगलभावना समारोह में तेयुप, चेन्नई के अध्यक्ष विकास कोठारी ने कहा कि मात्र आपश्री यह मंगलभावना समारोह के सिंघाड़ों का मंगलभावना समारोह नहीं है। यह समारोह एक गौरवशाली परंपरा का है, जिसकी सफल और समर्थ संवाहक के रूप में मुनिश्री और साध्वीश्री जी हमारे मध्य विराजमान हैं।

चारित्रात्माओं द्वारा चेन्नई को ऐतिहासिक चातुर्मास का पावस प्रवास करने और हम पर आध्यात्मिक ज्ञान की गंगा बहाने के लिए आपश्री के प्रति अनंत कृतज्ञता।

मुनि सुधाकर कुमार जी व मुनि नरेश कुमार जी एवं साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की कृपादृष्टि से इस वर्ष समस्त तेयुप कार्यक्रम सुगम एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुए। तेयुप द्वारा जाने-अनजाने में हुई अविनय आराधना से अंतर्मन से खमतखामणा प्रेषित की तथा आगामी विहार की सुखसाता हेतु मंगलकामना प्रेषित की।

भिक्षु त्याग चेतना केंद्र : आचार्यश्री महाश्रमण

(आचार्य भिक्षु दीक्षा/संयम स्थल, बगड़ीनगर, पाली)

बगड़ी।

तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथमाचार्य आचार्य भिक्षु ने लीलड़ी नदी के किनारे स्थित लगभग ५०० साल पुराने वटवृक्ष के नीचे २७१ वर्ष पूर्व दीक्षा ग्रहण कर अपने संयम जीवन का शुभारंभ किया। इस संस्थान को तेरापंथ धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में चिर-स्मरणीय बनाने एवं स्थायी पहचान दिलाने के उद्देश्य से बगड़ी निवासी, भिलाई (छ०ग०) प्रवासी दानमल पोरवाल ने पोरवाल चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से एक लघु स्मारक दिनांक ३१ मार्च, २०१२ को आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में समाज को सौंपा था। अब पुनः आचार्यप्रवर के शुभागमन पर दिनांक ४ दिसंबर, २०२२ को उस स्मारक का जीर्णोद्धार करवाकर वहाँ एक पिरामिड का निर्माण करवाया गया। जिसका लोकार्पण युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में हुआ।

इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने इस संस्थान का नामकरण 'भिक्षु त्याग चेतना केंद्र' के रूप में करते हुए 'ॐ भिक्षु ॐ भिक्षु ॐ भिक्षु ॐ : जय भिक्षु जय भिक्षु जय भिक्षु जय' मंत्र का उच्चारण किया। आचार्यश्री के दर्शनार्थ देशभर से समाज के अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर आचार्यप्रवर एवं उपस्थित समस्त चारित्रात्माओं के प्रति भावभरी कृतज्ञता प्रकट करते हुए पोरवाल चेरिटेबल ट्रस्ट के मुख्य न्यासी दानमल पोरवाल ने आह्वान कर समस्त तेरापंथ समाज से निवेदन किया है कि वे जब भी तेरापंथ की त्रिवेणी सिरियारी, कंटालिया और बगड़ी पधारें तब भिक्षु त्याग चेतना केंद्र पर पहुँचकर पिरामिड में ध्यान एवं जप का आध्यात्मिक लाभ अवश्य लें।

दिवंगत मुनि शांति कुमार जी के प्रति

अर्हम्

● **शासनश्री मुनि विजय कुमार** ●

सुजानगढ़वासी विमल, नाहटा परिवार,
स्वर्गारोहण कर गए, मुनिवर शांति कुमार।।

नेमि मुनि की प्रेरणा से उपजा वैराग्य,
मैं भी सहयोगी बना, जाग गया सौभाग्य।।

गुरुकुलवासी बन रहे, चम्पक भ्राता साथ,
सेवा का अवसर मिला, रहा सदा सिर हाथ।।

पीछे रहते थे नहीं, आता सम्मुख काम,
गंगाशहर प्रवास में, अंतिम लिया विराम।।

रोग असाध्य शरीर में, कोई नहीं उपाय,
है यह मंगलकामना, पाये शिव सुखदाय।।

जिनका सेवा भाव उदार

● **मुनि चैतन्य कुमार 'अमन'** ●

चातुरगढ़ के चतुर संत थे सेवा भावी हँसमुख
संघ-संघपति के चरणों में रहे सदा वे सम्मुख
श्री तुलसी महाप्रज्ञ से पाई सचमुच कृपा अपार।।

मुनिवर श्रीडूंगर मुनि चंपक मुनि नगराज मुनि की
सेवा सझी सजोरी भारी लगी सभी को नीकी
काम काज में थे हड़ीफ वे मिलनसार साकार।।

अहमदाबाद में मुझे मिला उनकी सेवा का मौका
छह महीनों का समय अरे! वह मौका बड़ा अनोखा
दिल-दिमाग में बसी हुई है उनकी कृपा अपार।।

अंतिम दिन जो हुई वेदना शब्दों में न कह पाए
महाश्रमण शासन में मुनिवर शांति स्वर्ग सिधाए
मुनि चैतन्य 'अमन' कामना पाओ मोक्ष उदार।।

लय : गण का गौरव गाएँ हम---

संघ प्रभावक संत थे मुनि शांति कुमार जी

सिरियारी।

मुनि शांति कुमार जी बीकानेर क्षेत्र के भोमिए संत थे। लंबे समय तक उन्हें गंगाशहर, बीकानेर, भीनासर व उदासर क्षेत्र में रहने का अवसर मिला। उन्होंने मुनि डूंगरमल जी, मुनि चंपालाल जी, मुनि नगराज जी, मुनि राजकरण जी आदि वरिष्ठ संतों की सेवा की। सभी संतों की चित्त समाधि में अपने जीवन का अधिकांश भाग बिताया। वे मिलनसार, सेवाभावी संत थे। गंगाशहर क्षेत्र में प्रवास करने वाले सभी संत-सतियाँ उनकी सेवा से प्रसन्न थे। ये विचार मुनि मुनिव्रत स्वामी जी ने उनकी स्मृति में कहे।

मुनिश्री ने कहा कि मुनि शांति कुमार जी न केवल तेरापंथ श्रावक समाज बल्कि उस क्षेत्र में प्रवास करने वाले सभी कौम के लोगों से परिचित थे। सेवा चिकित्सा की दृष्टि से डॉक्टरों एवं राजनेताओं, पत्रकारों से भी अच्छा परिचय था। उस क्षेत्र में उन्होंने धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना की। कहा जा सकता है कि वे एक प्रभावशाली संत थे।

✦ *जीना कोई विशेष बात नहीं, विशेष बात है कलात्मक जीवन जीना।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली।

अभातेममं के निर्देशन में समृद्ध राष्ट्रीय योजना में निर्माण परियोजना के अंतर्गत प्रोजेक्ट होम हेल्पर्स कार्यशाला का आयोजन तेममं, दिल्ली द्वारा तेरापंथ भवन, रोहिणी में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। स्वागत वक्तव्य उपाध्यक्ष सरोज सिपानी ने दिया। हेल्थ एंड हाइजीन विषय पर एन०के०एस० हॉस्पिटल की डॉ० लवदीप कौर ने माहवारी के संबंध में, गर्भधारण के दौरान रखी जाने वाली सावधानी के बारे में और बच्चेदानी के मुँह के कैंसर से बचाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कार्यसमिति सदस्य व ज्ञानशाला प्रकोष्ठ केंद्रीय समिति सदस्य सरोज छाजेड़ ने एजुकेशन पर बेटी पढ़ाने पर जागरूकता लाने के लिए जागें और जगाएँगे, बेटी को पढ़ाएँगे से होम हेल्पर्स को प्रेरित किया।

टैरों कार्ड रीडर व न्यूमिरोलॉजिस्ट जयश्री राखेचा ने आत्मरक्षा, पैसों की बचत, संयत व्यवहार, बीमा आदि के बारे में विस्तार से समझाया।

सोशल वर्कर संपूर्णा एनजीओ की संस्थापिका डॉ० शोभा विजेंद्र ने बहनों को समझाया कि स्वयं का ध्यान रखें और घर-परिवार में कैसे संतुलन बनाकर हम जीवन को खुशियों से भर सकते हैं।

रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन ने होम हेल्पर्स के स्वास्थ्य को लेकर इतने बड़े स्तर पर जागरूकता के लिए महिला मंडल के प्रति गौरव का अनुभव कर रहे हेयर बधाई देते हैं।

कार्यशाला में हेल्पर्स बहनों को गिफ्ट देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में तेममं, दिल्ली की पूर्वाध्यक्ष मनफूल बोथरा, रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन, शास्त्रीनगर सभा के अध्यक्ष संजय सुराणा, शालीमार सभा की अध्यक्ष सज्जन गिड़िया, दिल्ली ज्ञानशाला की परामर्शिका सरिता चोपड़ा की विशेष उपस्थिति रही।

मुख्य अतिथि डॉ० शोभा विजेंद्र एवं मुख्य वक्ता डॉ० लवदीप कौर को दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रचार-प्रसार मंत्री प्रवीणा सिंघी एवं आभार ज्ञापन सहमंत्री इंदिरा सुराणा ने किया।

जैन धर्म के वंडर्ज की पुनरवर्तन की कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में जैन धर्म के वंडर्ज की कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा मंगलाचरण गीतिका से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंडल की उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने सभी का स्वागत करते हुए साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी दक्षप्रभा जी एवं साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि हम सब दुनिया के सेवन वंडर्ज के बारे में जानते हैं पर क्या आप सब जैन धर्म के वंडर्ज के बारे में जानते हो? उन्होंने जैन धर्म के १० अछेरे के बारे में बहुत ही सरल और उदाहरण देकर समझाया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने १४ सपनों का ६ काय के माध्यम से समझाया जैसे–पृथ्वी काय के साथ रत्नराशि देव विमान कुंभ कलश, अप्प काय के साथ क्षीर समुद्र और पद्म सरोवर आदि अलग-अलग उदाहरण के द्वारा बहनों को बहुत ही सरल तरीके से १४ सपनों को बताया।

कार्यशाला में अभातेममं, कार्यकारिणी सदस्य लता जैन महिला मंडल की संरक्षिका गुलाब देवी छाजेड़, सुशीला देवी छाजेड़ एवं कार्यकारिणी सदस्य बहनें उपस्थित थी। कार्यशाला का संचालन सीमा छाजेड़ ने किया। हेमलता सुराना ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

रिश्तों का उत्सव मनाएँ, खुशियाँ ढूँढ़ लाएँ

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा प्रभावती सामायिक जोन की बहनों द्वारा 'रिश्तों का उत्सव मनाएँ' कार्यशाला का आयोजन नवनीत, दीपा डागा के यहाँ सिख विलेज में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र से किया गया। तत्पश्चात पारसनाथ जाप, लोगस्स पाठ, तीर्थंकर चौबीसी, २५ बोल, बारह भावना एवं प्रतिक्रमण की पाटियों को दोहराया गया। जोन की बहनों द्वारा एवं कार्यसमिति सदस्यों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष अनीता गिडिया के केसरिया परिधान में उपस्थित सभी बहनों का स्वागत किया।

सर्वप्रथम देवरानी-जेठानी की जोड़ी में संतोष, रिंकू डागा ने अपने जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव साझा किए। दूसरा जोड़ा संजू-मनीषा बोहरा का रहा। उनका पिछले २३ सालों का प्यार भरा जीवन का साथ रहा।

तीसरी जोड़ी सुधा व बबीता दुगड़ की रही। उन्होंने एक-दूसरे के समर्पण की तारीफ तथा एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र को दोनों की खुशी का राज बताया।

रीटा और मंजु बरड़िया ने भी अपने बरसों के अटूट साथ को कविता द्वारा व्यक्त किया। जूली और दीपा की जोड़ी ने अपने खट्टे-मीठे अनुभव सुनाए। एक-दूसरे के प्रति कैसे वो समर्पित हैं, बताया।

उषा दुगड़ एवं प्रभा दुगड़ की जोड़ी ने एक-दूसरे की योग्यता की सराहना की। साथ ही प्रभा ने उन्हें सदैव सहयोग देने वाली जेठानी बताया। अनीता सुराणा ने भी रोचक गीत द्वारा अपने अनुभव सुनाए।

प्रभा दुगड़ ने कविता द्वारा बताया कि मैं मेरा, तू तेरा छोड़कर यदि हम हमारा आजमाएँ, तो क्या मजाल कि किसी रिश्ते में दरार आ जाए।

आभार ज्ञापन कार्यसमिति सदस्य सायर दुगड़ ने गीत द्वारा समा बांध दिया। कार्यक्रम में चंद्रकला गिडिया, इंदु कुंडलिया, उषा दुगड़, ममता सुराणा, ज्योति नवलखा, विमला श्यामसुखा, मंजु बरड़िया, सरिता सुराना, गुलाब देवी डागा, सरोज नाहटा, उपाध्यक्ष सरला मेहता आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन जूली बैद द्वारा काव्यात्मक रूप में किया गया।

'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं की निर्देशित योजना 'निर्माण' के अंतर्गत प्रोजेक्ट 'उम्मीद एक बेहतर कल की' प्रथम चरण के अंतर्गत 'सकारात्मक सोच' विषय पर तेममं, टी-दासरहल्ली के द्वारा गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। अध्यक्षा रेखा मेहर ने सभी का स्वागत किया। उपाध्यक्ष नेहा चावत ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि प्रयोग करवाया और कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्य के विषय में बताते हुए कहा कि किस प्रकार बच्चों में सकारात्मक सोच का विकास एवं सद्-संस्कारों का सिंचन किया जा सकता है।

महिला मंडल की कार्यकारिणी से बबिता गांधी ने उदाहरणों के माध्यम से बच्चों को बताया कि किस प्रकार हमारे जीवन में किसी की मदद करना महत्त्वपूर्ण है। हैल्पिंग हैंड्स के लाभों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि साधार्मिक वात्सल्य से हमारे भीतर सफलता, आत्मविश्वास जैसे गुणों का विकास होता है। कर्म अच्छे हों तो उनका फल भी अच्छा ही होता है, बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए क्या खाना चाहिए वो भी बताया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री गीता बाबेल ने किया।

स्कूल की प्रिंसिपल चिकतायम्मा ने महिला मंडल के कार्यों एवं समय-समय पर इस तरह की कार्यशाला द्वारा बच्चों में संस्कार का सिंचन करने के लिए मंडल की सराहना की। प्रचार-प्रसार मंत्री सरोज मारू ने कहा कि बच्चों में सकारात्मक सोच आनी चाहिए। कार्यशाला में लगभग ७५ बच्चों ने भाग लिया। आभार ज्ञापित रुचिका गांधी ने किया।

लाइब्रेरी का श्रीगणेश

चेम्बूर (मुंबई)।

अभातेममं के निर्देशन में मुंबई में तेममं के तत्त्वावधान में चेम्बूर क्षेत्र द्वारा लाइब्रेरी का श्रीगणेश विद्या मंदिर एवं जूनियर कॉलेज (वाशी नाका) में किया गया। इस लाइब्रेरी में चेम्बूर महिला मंडल द्वारा एक अलमारी एवं ३५० किताबें प्रदान की गई। जिसका लाभ स्कूल में पढ़ने वाले ६४६ बच्चे लेंगे।

फीड दा माइंड स्कूल के प्रधानाचार्य हनुमंत चौहाण, क्रांति सुराणा एवं संपूर्ण महिला मंडल का सहयोग रहा। नवकार मंत्र सुमिरन के बाद लाइब्रेरी खोलकर लाइब्रेरी का अनावरण किया गया।

कार्यक्रम में अभातेममं के कार्यकारिणी से निर्मल चंडालिया, मुंबई अध्यक्ष रचना हिरण, मंत्री अलका मेहता, उपाध्यक्ष विमला कोठारी, कोषाध्यक्ष सुनीता सुतरिया, मुंबई तेममं कार्यसमिति से अंजू कोठारी, क्रांति सुराणा, कांता बड़ाला, विशेष सहयोगी सुमन मेहता, सरिता ढालावत, चेम्बूर सभा अध्यक्ष जुगराज बोहरा, महिला मंडल संयोजिका तारा आच्छा सहित महिला मंडल की बहनों की उपस्थिति रही।

सहायक हाथों की सहायता कार्यक्रम का आयोजन

साहूकारपेट, चेन्नई।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, चेन्नई की आयोजना में तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट में निर्माण परियोजना के अंतर्गत एड टू एसेस्टिंग हैंड कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

कार्यक्रम की जानकारी संयोजिका राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य दीपा पारख ने प्रस्तुत की। महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने आगंतुकों का स्वागत किया। साहूकारपेट सभा भवन ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी विमल चिप्पड़ ने महिला मंडल के कार्यों की सराहना करते हुए पूरी टीम को बधाई प्रेषित की।

कार्यक्रम को तीन सत्रों में विभाजित किया गया। कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला ने तमिल भाषा में प्रथम सत्र 'हिंसा के खिलाफ लड़ाई' विषय पर रोचक जानकारी प्रस्तुत की। जीवन बीमा के एजेंट पवन कुमार जैन ने लाइफ इंश्योरेंस पर जानकारी प्रस्तुत की। राजनीतिज्ञ महानुभाव M S Dirviam M C ने कार्यक्रम के विषय पर प्रकाश डालते हुए महिला मंडल के इस प्रकार के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में पधारे हुए सभी राजनीतिज्ञ महानुभाव एवं पी०के० जैन का महिला मंडल द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अरविंद चोरड़िया का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

होम हेल्पर में साहूकारपेट सभा भवन में हेल्पर्स शंकर, संजीव, जीतू, सुब्रमण्यम, राजू, संजय, रंगस्वामी, धनलक्ष्मी का सम्मान महिला मंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान सिलाई प्रशिक्षण कराने वाली दो बहनों का महिला मंडल द्वारा समान किया गया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ललित आंचलिया उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री सुभद्रा लुणावत ने किया। कार्यक्रम में महिला मंडल के पदाधिकारी एवं कार्यसमिति का सहयोग रहा।

दो तीर्थ के आध्यात्मिक मिलन का आयोजन

उदयपुर।

एक ही धारा के साधु और साध्वीवृंद का आध्यात्मिक मिलन हुआ। मेवाड़ की धरा पर द्रुतगति से लाडनूं से मुंबई की ओर विहाररत साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी सुषमा कुमारी जी आदि व साध्वी विमलप्रज्ञा जी लगभग २२ किलोमीटर का विहार कर उदयपुर पधारे। साध्वीवृंद, उदयपुर में पंचवटी स्थित श्याम चंडालिया के यहाँ पधारे। जहाँ विराजित मुनि सुरेश कुमार जी से सौहार्दपूर्ण आध्यात्मिक मिलन हुआ।

जैन धर्म के साधु और साध्वी इन दो तीर्थ के चार सिंघाड़ों का आध्यात्मिक मिलन को देखकर उदयपुर शहरवासी व सेवारत मुंबई का श्रावक समाज अभिभूत था। मुनिवृंद ने केंद्र से पधारे साध्वीवृंद से परमपूज्य गुरुदेव और साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के सुख-संवाद की पुच्छा की। साध्वीश्री जी ने क्षमापना करते हुए मुनिश्री की साधना के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

बालोतरा।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में मुमुक्षु मनीषा, मुमुक्षु तुलसी भगिनीद्वय का मंगलभावना समारोह का आयोजन न्यू तेरापंथ भवन, अमृत सभागार में हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी पावनयशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी द्वारा महाश्रमण अष्टकम् के साथ हुआ। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि दीक्षा तो व्रत संग्रह, व्रतों के कवच धारण करने का नाम दीक्षा है। दीक्षा जीवन निर्माण एवं रूपांतरण की प्रतिक्रिया है, अध्यात्म प्रयोगों की साध्य भूमि है दीक्षा। दीक्षा का अर्थ है अध्यात्म का रूपांतरण, संयम का अवतरण। संक्षेप में आत्म साधना के चरम बिंदु पर पहुँचाने वाले सोपान का नाम है दीक्षा।

तेरापंथ धर्मसंघ की दीक्षा गुरु के प्रति सर्वस्थना समर्पण दीक्षा है। आप दोनों गुरु इंगित की आराधना करती हुई अध्यात्म पथ पर अग्रसर होती रहें, संयम के सुमन खिलते रहें।

साध्वी रातिप्रभा जी ने दोनों के प्रति मंगलकामना करते हुए कहा कि संयम उसे कहा जाता है—सजग है, जगता है। संवर की साधना अनुत्तर साधना है, संयम ग्रहण करना लघुवय में दोनों बहनें संयम की ओर अग्रसर हो रही हैं, यह दृढ़ मनोबल का परिचय है और इनके माता-पिता भी साधुवाद के पात्र हैं।

साध्वी गौरवयशा जी ने कहा कि अध्यात्म भाव का साधन अभिषेक है दीक्षा और इधर-उधर फिसलती आजादी का ब्रेक है दीक्षा। साध्वी कलाप्रभा जी ने भी मंगलभावना व्यक्त की तथा साध्वीश्री जी ने समूह स्वर में गीत के द्वारा मंगलभावना व्यक्त की।

ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, तेयुप अध्यक्ष संदीप, ज्ञानशाला प्रभारी राजेश बाफना, तेमम अध्यक्ष निर्मला संकलेचा, कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वेद मेहता, अभातेममं क्षेत्रीय प्रभारी सारिका बागरेचा, कमलादेवी ओस्तवाल, पारमार्थिक शिक्षण संस्थान के संरक्षण धनराज भंसाली तथा दीक्षार्थी बहनों के परिवार से उनकी बहन नीतू हिना, भाई सुमित निर्मल आदि ने गीत, भाषण, मुक्तक आदि से मंगलभावना की।

मुमुक्षु बहन मनीषा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि यह संसार भुलावा है, यहाँ कोई अपना नहीं है। यह सकल संसार कोरा सपना है और मोह की जाली में फँसकर व्यर्थ है। इसके साथ ही उन्होंने सबकी कृतज्ञता एवं क्षमायाचना की। मुमुक्षु तुलसी ने कहा कि मैं संयम में रमण कर और कर्मों की कारा तोड़ूँ। संयम पथ पर बढ़कर मुझे मेरे परिवार वालों ने सहयोग किया, आज्ञा दी। उसके प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

अच्छे इंसान बनने का संकल्प करें विद्यार्थी

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने क्वीन इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति त्याग प्रधान रही है। यहाँ त्याग का सदा से महत्त्व रहा है। बड़े-बड़े राजा, सम्राट चक्रवर्ती सभी लोग त्यागी संतों के चरणों में झुकते रहे हैं।

बालाजी कॉलेज और क्वीन इंटरनेशनल स्कूल के सभी विद्यार्थी देश के श्रेष्ठ नागरिक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करने का प्रण लें। एक अच्छे इंसान बनकर देश की, परिवार की अधिक-से-अधिक सेवा करें। टीपीएफ सदस्य सुनील जैन ने बताया कि बालाजी कॉलेज के चेयरमैन कैलाश अग्रवाल एवं कॉलेज के प्रिंसिपल ने अपने विचार व्यक्त किए और मुनिश्री का स्वागत किया।

अभातेयुप के प्रभारी विकास जैन ने मुनिश्री का परिचय प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा, कांटाबाजी के अध्यक्ष युवराज जैन ने मुनि प्रशांत कुमार जी द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक कॉलेज, विद्यालय को भेंट की।

दीक्षार्थी अभिनंदन समारोह

रायपुर।

सिरियारी में संपन्न होने जा रही 'दीक्षा महोत्सव' में संयम जीवन को धारण करने जा रहे सरदारशहर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी मुमुक्षु दक्ष नखत अपने परिजन वीर पिता दीपक, वीर माता बिंदु व परमार्थी शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत बहन मुमुक्षु सलोनी के साथ रेलमार्ग द्वारा सूरत से रायपुर होते हुए हावड़ा की यात्रा कर रहे थे।

इस क्षण को अविस्मरणीय बताते हुए तेरापंथी सभा, रायपुर द्वारा दीक्षार्थी का अभिनंदन रायपुर रेलवे स्टेशन में करते हुए दीक्षार्थी के संयम पथ की प्रशंसा करते हुए आगामी संयम जीवन की आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ करते हुए अभिनंदन किया। अभिनंदन करने का लाभ राजकुमारी दुगड़, सभा मंत्री वीरेंद्र डागा, नवीन दुगड़, खेमराज डागा ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

शाहदरा, दिल्ली।

रितेश-नेहा जैन, दिल्ली शाहदरा प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा, विनीत मालू ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारकों की तरफ से आभार ज्ञापन किया गया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से जैन परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

चेन्नई।

शकुंतला-कन्हैयालाल मेहता राणावास निवासी, एम०के०बी० नगर, चेन्नई प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संपादित हुआ।

जैन संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, हनुमान सुखलेचा ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ विधि को आगे बढ़ाया।

संस्कारकों द्वारा मेहता परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। इस अवसर पर आकाश मेहता, बादल मेहता के साथ अनेकों परिजन, विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

भवन का शुभारंभ

अहमदाबाद।

तेरापंथी सभा, अहमदाबाद पश्चिम द्वारा एक अस्थायी भवन का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विक्रम दुगड़, आनंद बोथरा, जागृत दुगड़, अपूर्व मोदी ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि संपादित की।

तेरापंथी सभा, अहमदाबाद पश्चिम पदाधिकारी को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। सभा पश्चिम के मंत्री सुरेश दक ने पधारे हुए सभी पदाधिकारी एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापन किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

जीवनमल चिंडालिया एवं अशोक कुमार दुधोड़िया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया।

संस्कारक आनंद बोथरा, जागृत दुगड़ ने मंगलाचरण कर मांगलिक मंत्रोचार के साथ विधि को संपादित किया। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक आनंद बोथरा ने किया। परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई।

परिवार की ओर से जीवनमल चिंडालिया एवं अशोक कुमार दुधोड़िया ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

जयपुर।

राजेंद्र कुमार तातेड़ व मोहित तातेड़ के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रवीण जैन ने पूरे विधि-विधान से मंगलमय वातावरण में मंत्रोच्चार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

तेयुप, जयपुर अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, निवर्तमान अध्यक्ष राजेश छाजेड़, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य श्रेयांस बैंगानी, सदस्य जयंत पुगलिया की उपस्थिति में परिषद परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाया गया।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

मोनिका-संदीप सुराणा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विधि-विधानपूर्वक मंगलमय वातावरण में मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

तेयुप, जयपुर से जैन संस्कारक विधि के संयोजक बिनीत सुराणा सहित समाज के अन्य महानुभावों की उपस्थिति में तेयुप परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाया गया।

✦ *बीमारी से शरीर कभी प्रभावित हो सकता है, परंतु मनुष्य अपने मन को उससे प्रभावित न होने दे।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

पहला प्रकरण

इन काषायिक भावों के द्वारा मनुष्य में अज्ञान, संशय, विपर्यय, मोह, आवरण आदि घटित होते हैं। महर्षि पतंजलि ने प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति को वृत्ति माना है।

वृत्तियों का शोधन तपोयोग से होता है। पानी, हवा और धूप के अभाव में अंकुरित बीज भी मुरझा जाता है। इसी प्रकार पोषक सामग्री के अभाव में अर्जित संस्कार निर्वीर्य बन जाते हैं। गंदा जल शोधक द्रव्यों के प्रयोग से स्वच्छ हो जाता है। इसी प्रकार तपोयोग के द्वारा वृत्तियों के दोष विलीन हो जाते हैं। इस शोधन की प्रक्रिया पर अग्रिम पृष्ठों में प्रकाश डाला जाएगा।

(४) आत्ममात्रापेक्षं अतीन्द्रियम्।।
(५) चेतनावद् द्रव्यं आत्मा।।
(६) ज्ञानदर्शन सहजानंद सत्यवीर्याणि तत्स्वरूपम्।।
(७) परमाणुसमुदयैस्तदावरणविकरणे।।
(८) तत्संसर्गाऽसंसर्गाभ्यां आत्मा द्विविधः।।
(९) बद्धो मुक्तश्च।।
(१०) स्वरूपोपलब्धिर्मुक्तिः।।

(४) पौद्गलिक साधनों की अपेक्षा रखे बिना केवल आत्मा के द्वारा जो प्रत्यक्षज्ञान होता है, उसे अतीन्द्रिय कहा जाता है।
(५) जो द्रव्य चेतनावान होता है, उसे आत्मा कहा जाता है।
(६) ज्ञान-दर्शन, सहज आनंद, सत्य (पूर्ण वीतरागता) और वीर्य–यह आत्मा का शुद्ध स्वरूप है।
(७) परमाणु स्कंधों के द्वारा आत्मा का स्वरूप आवृत्त और विकृत होता है।
(८) स्वभाव की दृष्टि से सब आत्माएँ समान होती हैं, फिर भी परमाणु समुदायों के योग और वियोग के कारण वे दो प्रकार की होती हैं।
(९) परमाणु-समुदायों के योग से युक्त आत्मा बद्ध और उनके योग से वियुक्त आत्मा मुक्त कहलाती है।
(१०) स्वरूप की उपलब्धि होती है, आवृत्त-स्वरूप अनावृत्त होता है, वही मुक्ति है।

अतीन्द्रिय ज्ञान और आत्मा

चेतना के तीन स्तर हैं–ऐन्द्रियिक, मानसिक और अतीन्द्रिय। चेतना का आवरण सघन होता है तब उसके ऐन्द्रियिक स्तर का विकास होता है। उसका आवरण पतला हो जाता है तब मानसिक स्तर का विकास होता है। जब वह बहुत क्षीण या पूर्णतः विलीन हो जाता है तब अतीन्द्रिय स्तर का विकास होता है। हम लोग इंद्रिय और मन के स्तर पर ज्ञान कर रहे हैं इसलिए अतीन्द्रिय ज्ञान की कल्पना नहीं कर पाते। इंद्रिय स्तर पर काम करने वाला क्या मानसिक स्तर की कल्पना कर सकता है? हम उत्तरवर्ती विकास की कल्पना नहीं कर सकते, उसका हेतु हमारी अपूर्णता है। हम अपनी पूर्णता का अनुभव कर अतीन्द्रिय स्तर की परिकल्पना से दूर नहीं रह सकते।

चेतना के पहले दो स्तर परोक्ष होते हैं। उसका तीसरा स्तर प्रत्यक्ष होता है। ज्ञान वस्तुतः परोक्ष नहीं होता किंतु उसकी पद्धति परोक्ष भी बन जाती है। ऐंद्रियक स्तर पर हम ज्ञेय को इंद्रियों के माध्यम से जानते हैं, साक्षात् नहीं जानते इसलिए हमारा वह ज्ञान परोक्ष होता है। कल्पना, चिंतन और मनन में कल्पनीय, चिंतनीय और मननीय वस्तु का साक्षात् संपर्क नहीं होता इसलिए मानसिक स्तर का ज्ञान भी परोक्ष होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान वह होता है, जहाँ ज्ञाता ज्ञेय को साक्षात् जानता है–शारीरिक या पौद्गलिक उपकरणों की सहायता लिए बिना जानता है।

साधना का उद्देश्य है–परोक्षानुभूति की भूमिका को पार कर प्रत्यक्षानुभूति की भूमिका में प्रवेश करना, चेतना के आवरण को विलीन कर उसे अनावृत्त करना। चेतना का अनावरण होने पर हमारी साधना सफल हो जाती है।

परोक्ष और प्रत्यक्ष ज्ञान की भेदरेखा तीन बिंदुओं से बनी है। परोक्ष ज्ञान का विषय है–स्थूल, अव्यवहित और निकटवर्ती वस्तु। प्रत्यक्ष का विषय है–स्थूल या सूक्ष्म, व्यवहित या अव्यवहित, दूर या निकटवर्ती वस्तु। परोक्ष ज्ञान मनन और शास्त्र (शब्दज्ञान) के माध्यम से होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान के तीन प्रकार हैं–अवधिज्ञान, मनःपर्यायज्ञान और केवलज्ञान। चेतना की पूर्ण अनावृत्त दशा का नाम केवलज्ञान है। उसके द्वारा भौतिक और अभौतिक, मूर्त और अमूर्त सभी प्रकार के ज्ञेय जाने जाते हैं। अवधि आत्मर मनःपर्याय के द्वारा केवल भौतिक और मूर्त द्रव्य ही जाने जाते हैं। अवधिज्ञान से हम भींत से परे की वस्तु जान सकते हैं। किंतु अभौतिक ज्ञेय को नहीं जान सकते। मनःपर्याय ज्ञान के द्वारा हम चिंतन मे प्रयुक्त पौद्गलिक तत्त्वों को जान सकते हैं किंतु चेतना की अभौतिक सत्ता को नहीं जान सकते।

साधना के द्वारा हम स्थूल जगत् से संबंध विच्छिन्न कर सूक्ष्म जगत् से संपर्क स्थापित कर सकते हैं। जैसे-जैसे हमारे मन का विक्षेप, विकार और आवरण विलीन होता है, वैसे-वैसे सूक्ष्म पर आया हुआ आवरण दूर हटता चला जाता है।

हमारी निरावरण अवस्था ही आत्मा का स्वरूप है। यही हमारी मुक्ति है। आत्मा और मुक्ति का स्वरूप एक है। जो आत्मा है वही मुक्ति है और जो अनात्मा है वही बंधन है। हम जब तक बंधन की स्थिति में रहते हैं, तब तक हमें अपना स्वरूप उपलब्ध नहीं होता। जैसे-जैसे हम बंधन को काटते चले जाते हैं, वैसे-वैसे ही हमारी मुक्ति होती जाती है। मुक्ति केवल अंतिम क्षण में ही नहीं होती किंतु उसका एक क्रम होता है। उसके अनुसार साधना के हर क्षण में मुक्ति होती है। साधना जैसे ही चरम बिंदु पर पहुँचती है, वैसे ही मुक्ति का परिपूर्ण रूप प्रकट हो जाता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(११७)

बदली जमीं आसमां बदला
अब सब कुछ बदला-बदला है।
बदल गई दुनिया सपनों की
क्रूर नियति ने हमें छला है।।

ढले गगन में चाँद-सितारे
मन के सब अरमां बदले हैं
बदल गए मौसम के तेवर
पीड़ा के हिमगिरि पिघले हैं
रंग-बिरंगी इस दुनिया में
बुरा कौन है कौन भला है।।

एक उजाला था वह ऐसा
जिसने पूरी सदी उजाली
प्राण भरे हर पान-फूल में
था विचित्र कोई वनमाली
उसका यों अदीठ हो जाना
बतलाओ किसको न खला है।।

गिरी गाज धरती पर ऐसी
हुआ समय का चक्र अचल है
वर्ष और युग जितना लम्बा
हुआ जिंदगी का हर पल है
कैसे मानस को समझाऊँ
धीरज का पानी उथला है।।

जब तक था वह विषय नयन का
तब तक पूरा मोल न आंका
सदा निहारा ऊपर-ऊपर
गहराई में कभी न झाँका
खोले नयन बोधि के फिर भी
समझ न पाया मन पगला है।।

आगत में जीना सिखलाया
बना स्वयं कैसे अतीत वह
मुखरित रोम-रोम में सुषमा
काव्य मधुर या गजल गीत वह
अर्घ्य और क्या यह नन्हा-सा
आस्था का इक दीप जला है।।

(क्रमशः)

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१३) न वामाद् हनुतस्तावत्, संचारयेच्च दक्षिणम्।
दक्षिणाच्च तथा वामं, आहरन् मुनिरात्मवित्।।

आत्मविद् मुनि भोजन करते समय स्वाद लेने के लिए दाएँ जबड़े से बायीं ओर तथा बाएँ जबड़े से दायीं ओर भोजन का संचार न करे।

(१४) स्वादाय विविधान् योगान्, न कुर्यात् खाद्यवस्तुषु।
संयोजनां परित्यज्य, मुनिराहारमाचरेत्।।

मुनि स्वाद के लिए खाद्य-पदार्थों में विविध प्रकार के संयोग न मिलाए। इस संयोजना दोष का वर्जन कर वह भोजन करे।

स्वाद-विजय परम-विजय है। जो व्यक्ति रसनेन्द्रिय पर विजय पा लेता है, उसके लिए अन्यान्य इंद्रियों पर विजय पाना इतना कठिन नहीं होता।

भूख को शांत करने के लिए व्यक्ति खाता है। भोज्य पदार्थ स्वादिष्ट और अस्वादिष्ट भी होते हैं। जीभ का काम है—चखना। पदार्थ का स्पर्श पाकर जीभ जान लेती है कि यह स्वादिष्ट है या नहीं। इसे रोका नहीं जा सकता। प्रत्येक इंद्रिय अपनी-अपनी मर्यादा में विषय का ज्ञान कराती है। उसे रोका नहीं जा सकता। किंतु इंद्रिय-विषयों के प्रति होने वाली आसक्ति से बचा जा सकता है। यही साधना है।

इसी प्रकार स्वाद में आसक्त होने से बचना स्वाद-विजय है।

इसके दो मुख्य उपाय हैं—

(१) भोजन करने के लक्ष्य का स्पष्ट अनुचिंतन।

(२) समता का अभ्यास।

ये दोनों उपाय साधक को आत्माभिमुख करते हैं। जब उसे आत्मरस का स्वाद आने लगता है तब पौद्गलिक रस से उसका मन हट जाता है।

प्रस्तुत श्लोकों में स्वाद-विजय के तीन उपाय निर्दिष्ट हैं—

(१) आत्मरसानुभूति की ओर प्रवृत्ति।

(२) एक जबड़े से दूसरे जबड़े की ओर असंचरण।

(३) स्वाद के लिए खाद्य-पदार्थों के मिश्रण का वर्जन।

गीता में भी कहा है—

विषया विनिवर्तन्ते, निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोप्यस्य, परं दृष्ट्वा निवर्तते।।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न ५ : तप (निर्जरा) के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : तप के दो प्रकार हैं—(१) बाह्य। (२) आभ्यंतर।
बाह्य तप के छह प्रकार हैं—(१) अनशन, (२) ऊनोदरी, (३) भिक्षाचरी, (४) रस-परित्याग, (५) कायक्लेश, (६) प्रतिसंलीनता।
आभ्यंतर तप के छह प्रकार हैं—(१) प्रायश्चित्त, (२) विनय, (३) वैयावृत्त्य, (४) स्वाध्याय, (५) ध्यान, (६) व्युत्सर्ग

प्रश्न ६ : अनशन किसे कहते हैं? उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : अशन त्याग को अनशन कहते हैं। उसके दो प्रकार हैं—
(१) इत्वरिक — अल्पकालिक।
(२) यावत् कथित — यावज्जीवन
इत्वरिक तप कम से कम एक दिन, अधिक से अधिक छह मास तक का होता है।

प्रश्न ७ : भगवान् ऋषभ का बारहमासी तप क्या इत्वरिक अनशन में नहीं है?

उत्तर : यहाँ छह मासी तप का विवेचन भगवान् महावीर के शासनकाल की तपस्या के अनुसार कहा गया है। इससे पूर्व तीर्थंकरों के शासनकाल में अधिक तपस्या होती रही है। वह इत्वरिक अनशन के अंतर्गत ही आती है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

कालूगणी के युग में जहाँ श्रमण-श्रमणी संपदा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ, वहाँ तेरापंथ को विकास की विविध दिशाएँ मिलीं। संघ का पुस्तक भंडार काफी समृद्ध हुआ।

कला के प्रति कालूगणी का विशेष आकर्षण था। इसी आकर्षण ने साधु-साध्वियों के हर कार्य में, भले ही वह सिलाई का हो या रंगाई का, कला को प्रतिष्ठित किया। सुंदर एवं सूक्ष्म लिपि का विकास भी पूज्य कालूगणी के युग की देन है।

कालूगणी के युग में तेरापंथ का क्षेत्र-विस्तार भी बहुत हुआ। मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आदि सुदूर प्रांतों में सर्वप्रथम उन्होंने ही साधुओं को भेजा।

विद्या के क्षेत्र में और विशेषकर संस्कृत विद्या के क्षेत्र में कालूगणी के समय में उल्लेखनीय प्रगति हुई। उन्होंने न केवल संघ में संस्कृत पाठकों को ही तैयार किया अपितु 'श्री भिक्षु शब्दानुशासनम्' के रूप में संस्कृत व्याकरण को तैयार करवाकर संस्कृत विकास का एक द्वार खोल दिया।

कालूगणी के शासनकाल में चार सौ दस दीक्षाएँ हुईं। उनमें एक सौ पचपन साधु और दो सौ पचपन साध्वियाँ थीं। जब वे दिवंगत हुए तब एक सौ उनचालीस साधु और तीन सौ तेंतीस साध्वियाँ संघ में विद्यमान थीं।

कालूगणी का स्वर्गवास वि०सं० १९९३ भाद्रपद शुक्ला षष्ठी को गंगापुर (राजस्थान) में हुआ। वे अपने स्वर्गवास के तीन दिन पूर्व ही बाईस वर्षीय युवा मुनि तुलसी के सबल कंधों पर विशाल संघ का दायित्व सौंपकर निश्चिंत बन गए थे। कालूगणी के जीवन की अनेक उपलब्धियों में इसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है कि वे अपने पीछे संघ को आचार्य तुलसी के रूप में एक महान् सक्षम और सबल नेतृत्व सौंप गए।

आचार्य तुलसी

युगप्रधान गुरुदेव तुलसी इस युग के क्रांतिकारी आचार्यों में एक थे। जैनधर्म को जनधर्म के रूप में व्यापकता प्रदान करने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। वे तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें आचार्य थे।

गुरुदेव तुलसी का जन्म वि०सं० १९७१ कार्तिक शुक्ला द्वितीया को लाडनूं (राजस्थान) में हुआ। उनके पिता का नाम श्री झूमरमलजी खटेड़ एवं माता का नाम वदनांजी था। नौ भाई-बहनों में उनका आठवाँ स्थान था। प्रारंभ से ही वे एक होनहार व्यक्तित्व के धनी थे।

वि०सं० १९८२ पौष कृष्णा पंचमी को लाडनूं में ग्यारह वर्ष की अवस्था में उन्होंने पूज्य कालूगणी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण की। ग्यारह वर्ष तक गुरु की पावन सन्निधि में रहकर मुनि तुलसी ने शिक्षा एवं साधना की दृष्टि से अपने व्यक्तित्व को बहुमुखी विकास दिया। हिंदी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का तथा व्याकरण, कोश, साहित्य, दर्शन एवं जैनागमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। लगभग बीस हजार श्लोक परिमाण रचनाओं को कंठस्थ कर लेना उनकी प्रखर प्रतिभा का करिश्मा था।

संयम जीवन की निर्मल साधना, विवेक-सौष्ठव, आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन, बहुश्रुतता, सहनशीलता, गंभीरता, धीरता, अप्रमत्तता, अनुशासननिष्ठा आदि विविध विशेषताओं से प्रभावित होकर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी ने वि०सं० १९९३ भाद्रपद शुक्ला तृतीया को गंगापुर में उन्हें अपने उत्तराधिकारी के रूप में मनोनीत किया।

युवाचार्य पद पर वे मात्र चार दिन रहे। भाद्रपद शुक्ला षष्ठी को पूज्य कालूगणी दिवंगत हो गए। बाईस वर्षीय मुनि तुलसी के युवा कंधों पर विशाल धर्मसंघ का दायित्व आ गया। वे भाद्रपद शुक्ला नवमी को आचार्य पद पर आसीन हुए। उस समय तेरापंथ संघ में एक सौ उनचालीस साधु व तीन सौ तेंतीस साध्वियाँ थीं।

आचार्य पद का दायित्व संभालने के बाद आचार्य तुलसी ने ग्यारह वर्ष का समय धर्मसंघ के आंतरिक निर्माण में लगाया। निर्माण की इस शृंखला में उन्होंने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य किया साध्वी समाज में शिक्षा के प्रसार का। आज साध्वी समाज में शिक्षा की दृष्टि से बहुमुखी विकास हुआ है। इसके एकमात्र श्रेयोभागी थे—गुरुदेव तुलसी।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 दिसंबर, 22-1 जनवरी, 23

✦ *दूसरों की उन्नति देखकर नाखुश मत बनो, अपितु 'मैं भी विकास करूँ और दूसरे भी विकास करें।' यह भावना रखो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मुनिद्वय के स्वागत समारोह का आयोजन

सरदारपुरा।

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी एवं मुनि अतुल कुमार जी के संबोधि उपवन, धानिन पहुँचने पर संबोधि उपवन ट्रस्ट मंडल द्वारा स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। मुनि रविंद्र कुमार जी ने कहा कि नकारात्मकता को मन में ना रखें। सबके प्रति अच्छी भावना रखें। मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि रिश्ते तबाह होने के तीन कारण हैं, जिसमें पहला कारण है–इगो। जिस इंसान में इगो आ जाता है फिर वो इंसान अपनी गलती कभी नहीं मानता। चाहे उसकी गलती कितनी भी हो वो सामने वाले इंसान के सामने झुकना नहीं चाहता और अपनी गलती ना मानकर अपने रिश्तों को और जटिल बनाकर खराब कर देता है।

दूसरा कारण है कंट्रोल करना। जब भी आप किसी की लाइफ को कंट्रोल करने लग जाते हो तो वो रिश्ता धीरे-धीरे खत्म होने लग जाता है। फिर आप रिश्ते में नहीं, ऐसा लगता है कि आप बोझ बन रहे हो और सामने वाले को अपना एंप्लॉय बना रहे हो।

तीसरा कारण है गलतफहमी। कई बार आपस में झगड़े होने पर चाहे वो भाई-भाई का, पति-पत्नी का, माँ-बाप का रिश्ता हो, लोग गलतफहमी के शिकार हो जाते हैं।

स्वागत वक्तव्य संबोधि ट्रस्ट मंडल मुकेश कच्छारा ने दिया। स्वागत समारोह में अणुव्रत गौरव डॉ० बसंती लाल बाबेल, अणुविभा, राजसमंद, उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, धर्मचंद खाब्या, आमेट, शांतिलाल सोलंकी, गजपुर, सभा उपाध्यक्ष राजनगर विनय कोठारी, राजकुमार दक, राजसमंद, ज्ञानेश्वर मेहता, आमेट, गुणसागर धींग पडासली, कमलेश तलेसरा, कांकरोली, भीमराज कोठारी ने अपने विचार रखे।

मंगलाचरण तेयुप अध्यक्ष आमेट पवन कच्छारा ने किया। रोशनलाल गर्ग ने गीत का संगान किया। आभार संबोधि ट्रस्ट महामंत्री विनोद सोनी ने प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन चतर कोठारी ने किया। स्वागत कार्यक्रम में नाथद्वारा, आमेट, पडासली, कांकरोली, राजनगर, उदयपुर एवं सरदारगढ़, गजपुर, रिछेड़, कोयल आदि से लोग उपस्थित रहे।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

जसोल।

साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में मुमुक्षु मनीषा बाई कंकु चोपड़ा व मुमुक्षु तुलसी बाई चोपड़ा की जैन समण दीक्षा के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा, जसोल द्वारा मंगलभावना समारोह का आयोजन रखा गया।

साध्वी प्रमोदश्री जी ने कहा कि वर्तमान के संसार की भौतिकवादी सुख-सुविधा छोड़कर संयम पथ पर अग्रसर होने जा रही मुमुक्षु बहनों के लिए बड़े ही गौरव की बात है। सिवांची-मालाणी क्षेत्र का नाम स्वर्ण अक्षरों में जुड़ जाएगा।

साध्वी विजयप्रभा जी, साध्वी आदर्शप्रभा जी, साध्वी पार्श्वप्रभा जी ने भी मुमुक्षु बहनों के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

इसके पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से व मंगलाचरण से हुआ। तेमम व कन्या मंडल द्वारा स्वागत गीतिका का संगान किया गया। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़ ने दिया। इस अवसर पर सिवांची-मालाणी तेरापंथ अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, डूंगरचंद चोपड़ा, कांतिलाल ढेलड़िया, हीना गोलेच्छा, नीतू चोपड़ा, पुष्पादेवी बुरड़, कुनिका बाघमार, सहित प्रबुद्ध वक्ताओं ने मुमुक्षु बहनों के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। साथ ही मुमुक्षु मनीषा चोपड़ा व मुमुक्षु तुलसी चोपड़ा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विदाई गीत के साथ तेरापंथ कन्या मंडल की ओर से उप-संयोजिका कुनिका बागरेचा द्वारा आरती उतारकर, कुंकुम-तिलक लगाकर, माला पहनाकर एवं श्रीफल देकर दोनों मुमुक्षु बहनों का अभिनंदन किया। साथ ही मुमुक्षु बहनों के माताजी जसोदा देवी व पिताजी डूंगरचंद चोपड़ा का तेरापंथ समाज, जसोल द्वारा बहुमान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

पारिवारिक सौहार्द शिविर का आयोजन

बालेश्वर उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में राजस्थानी भवन में पारिवारिक सौहार्द शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें जैन-अजैन सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। 'कैसे रहे घर परिवार सुखी' विषय पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के साथ जीता है। समाज की सबसे छोटी व महत्त्वपूर्ण इकाई है–परिवार। परिवार एक सर्वव्यापी संस्था है। परिवार एक गुलदस्ता है। परिवार समूह चेतना का प्रतीक है। परिवार सत्यं शिवं, सुंदरं का शिवालय है। जिस परिवार में एकता, सामंजस्य, समझौता, व्यवस्था, सहिष्णुता, विवेक, विनय, वात्सल्य, एक नेतृत्व के प्रति आस्था, कृतज्ञता, आश्वास विश्वास आदि गुण हैं और एक-दूसरों के हितों की सुरक्षा करते हैं, निस्वार्थ भाव है, सेवा सहयोग का भाव है, वह घर स्वर्ग से बढ़कर है। उस घर को कोई भी परास्त नहीं कर सकता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मोबाइल, टीवी के अधिक प्रयोग से बचें। इसका ज्यादा उपयोग करने से चरित्र का दुष्प्रभाव पड़ता है, स्मरणशक्ति कमजोर होती है, संबंधों में कटुता आती है। मुनिश्री ने विशेष प्रेरणा देते हुए कहा कि घर-परिवार को सुखी रखने के लिए रहना, कहना, सहना सीखें। साप्ताहिक संगोष्ठियाँ करें, व्यक्तिगत सुख-दुःख की बात सुनें, जिससे घर का वातावरण सरस बनेगा। मुनि परमानंद जी ने कहा कि परिवार में आपसी संवाद कायम रहने से सौहार्द स्थापित होता है। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष धीरज धाड़ेवा ने स्वागत भाषण दिया। कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली, पूर्व अध्यक्ष बुद्धमल लुणिया, महासभा के आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा, गणेशमल सिंघी, जालेश्वर से समागत शोभा जैन ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। आभार ज्ञापन धीरज धाड़ेवा व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय तेरापंथ सभा व तेमम के कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में विशेष रूप से कोलकाता, बेतनटी, जलेश्वर, बारीपदा आदि के लोगों की विशेष उपस्थिति रही।

दो आध्यात्मिक धाराओं का मिलन

पुलल, चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी जैन तेरापंथ नगर, माधावरम् से विहार करके केसरवाड़ी जैन तीर्थ पधारे। केसरवाड़ी में विराजित स्थानकवासी आचार्य शिवमुनि जी के शिष्य मुनि डॉ० वरुण जी म०सा० से आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वीवृंद और मुनिवृंद ने आपस में अभिवादन किया। इस अवसर पर मुनिवृंद के सान्निध्य में चल रहे आत्म-साधना शिविर के साधकों को भी संबोधित किया।

डॉ० वरुण मुनिश्री म०सा० ने कहा कि ध्यान पद्धति के पुनरुद्धार में आचार्य महाप्रज्ञ जी का बहुत बड़ा योगदान है। मैंने जब जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अध्ययन किया था, तब साध्वीश्री जी उस समय समणी अवस्था में कुलपति थी।

सेवाभावी, मिलनसार, साधक संत थे मुनि शांति कुमारजी

सिरियारी।

लगभग ३५ बरसों तक एक ही क्षेत्र में प्रवास करने वाले मुनि शांति कुमार जी मिलनसार, सेवाभावी, साधक संत थे। उन्होंने मुनि डूंगरमल जी, मुनि चंपालाल जी, मुनि नगराज जी के सहयोगी के रूप में रहते हुए अपनी अग्लान भाव से सेवाएँ दी। गंगाशहर, भीनासर, बीकानेर, उदासर में प्रवास करने वाले संतों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। वहाँ के डॉक्टरों, राजनीतिज्ञों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, छतीस कोम के लोगों से अच्छा संपर्क-परिचय था अतः समाज के किसी कार्य को कराने में उनका अच्छा योगदान रहता था। विगत कुछ समय से वे अस्वस्थ थे, जिसका इलाज चल रहा था किंतु फिर अचानक स्वर्गस्थ हो गए। ये विचार मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने उनकी स्मृति करते हुए सिरियारी धाम में कहे।

मुनि अमन कुमार जी ने कहा कि कुछ वर्ष पूर्व अहमदाबाद में मुझे उनकी सेवा में रहने का अवसर प्राप्त हुआ था। उनका स्वभाव हँसमुख होने से सबके लिए प्रिय थे। हर जाति के लोग तथा पत्रकारों से उनका अच्छा परिचय होने से तेरापंथ की गतिविधियों, संवादों का प्रकाशन होने में उनका महान योगदान था। ऐसे संत के प्रति हम अपनी श्रद्धा समर्पित करते हैं कि वो आत्मा यथाशीघ्र मोक्षश्री का वरण करे।

क्षमा या माफी मानव व्यवहार का एक अहम् हिस्सा

चंडीगढ़।

क्षमा का मनुष्य के व्यक्तित्व में बहुत महत्त्व होता है। यदि आदमी गलती कर दे और उसके लिए माफी नहीं माँगे या कोई आदमी माफी माँगने पर भी किसी को माफ नहीं करे तो उसके व्यक्तित्व में अहम् संबंधी विकार है। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि माफ करने वाले व्यक्ति की हर कोई तारीफ करता है और उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल जाती है। कवियों ने क्षमा को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है।

मुनिश्री ने अंत में कहा कि जीवन का उद्देश्य ही धूमिल होने मत दीजिए जो जीवन को पीछे ले जाने वाला एक और मुख्य कारण है, उसे रूठना कहते हैं। व्यक्ति का इस प्रकार का स्वभाव उसे औरों से या परिवार, समाज से अलग कर देता है। इसलिए जीवन में हमेशा मानसिक और शारीरिक संतुलन के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

रायपुर।

तेरापंथ अमोलक भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी के रायपुर समणी केंद्र का प्रवास छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों के साथ उड़िया क्षेत्र को लाभान्वित करते हुए पूर्ण करके गुरु दर्शन हेतु सिरियारी पधारने से पूर्व मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया।

आयोजन में छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर, दुर्ग, रायगढ़, बिलासपुर, विश्रामपुर, मनेंद्रगढ़ क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर अपनी मंगलभावनाएँ प्रस्तुत की।

संचालन सभा मंत्री वीरेंद्र डागा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पूर्व जज गौतम चोरड़िया के साथ ही सभा, महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति के अलावा अन्य गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अपनी मंगलभावनाएँ व्यक्त की गई।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। तेयुप व कन्या मंडल ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। समणीवृंद द्वारा प्रेरणा पाथेय के साथ सुमधुर गीतिकाओं के द्वारा उपस्थित सभी के प्रति मंगलकामनाएँ व्यक्त की गई।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

अगरम ग्राम (आंध्र प्रदेश)।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का गुरुणि विज्ञश्री जी की शिष्या आर्यिका माताजी ज्ञेयश्री जी के साथ वर्धमान जैन विहारधाम भवन, अगरम ग्राम (आंध्र प्रदेश) में बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में आध्यात्मिक मिलन हुआ।

जैन धर्म की दो धाराओं (श्वेतांबर और दिगंबर) का यह मिलन सबको सहज ही आकर्षित कर रही था।

टीपीएफ के विविध कार्यक्रम

शपथ ग्रहण समारोह व इंटर ब्रांच कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन

अणुव्रत भवन, दिल्ली।

टीपीएफ, नोर्थ जोन की नवगठित कार्यकारिणी की शपथ एवं इंटर ब्रांच कनेक्ट का कार्यक्रम अणुव्रत भवन, नई दिल्ली के प्रांगण में साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में दिल्ली शाखा के आतिथ्य में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद के द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से की गई। टीपीएफ गीत का संगान फेमिना विंग द्वारा किया गया। मंगलाचरण की प्रस्तुति तेममं, फरीदाबाद एवं दिल्ली द्वारा की गई।

दिल्ली शाखा अध्यक्ष राजेश जैन ने सभी का स्वागत किया। निवर्तमान अध्यक्ष श्रील लुंकड़ ने जोनल अध्यक्ष का परिचय कराया। नव मनोनीत अध्यक्ष विजय नाहटा ने अपने विजन, मिशन और नवगठित टीम की घोषणा की एवं निवर्तमान अध्यक्ष ने सभी को पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण कराई।

नव मनोनीत अध्यक्ष विजय नाहटा ने अपने Rainbow विजन में व्यक्तिगत परिचय/मुलाकात, फेमिना-फ्यूचरा-नेक्स्ट जैन गठन, नए यूनिट/शाखा गठन, सदस्यता अभियान, संगठन और सामंजस्य, मासिक/त्रैमासिक कैलेंडर व प्लान, शाखा-जोन-राष्ट्र के आपसी संयोजन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की।

टीपीएफ आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि डॉ० रजनीश कुमार जी का प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि नॉर्थ जोन हर तरह से केंद्र बिंदु है और यहाँ संपादित प्रभावक कार्य की गूँज देश-विदेशों तक पहुँचती है। नॉर्थ जोन पहले दिन से ही कार्य में बढ़त ले चुका है। मेंबरशिप के साथ ही अन्य कार्यों में नैतिकता, सच्चे हृदय, दृढ़-निश्चय के साथ संकल्पित होकर एकजुट कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने कहा कि गुरु तुलसी के समय बुद्धिजीवी मंच रूप में अंकुरित और गुरु महाप्रज्ञ द्वारा उद्भव में आई इस संस्था का पल्लवन और पुष्पन गुरु महाश्रमण द्वारा हो रहा है। इस संस्था में बुद्धि और प्रतिभा का इतना अनूठा मेल है कि नए से नए कार्य का सृजन हो सकता है। चंद्रमा सी शीतलता, अरिहंत सी तेजस्विता, सागर सी गंभीरता, अदम्य उत्साह, कार्यकर्ताओं को जोड़ने की कला और अपनी शक्ति पर भरोसा व सही दिशा में नियोजन करते हुए यह संस्था समाज का मार्गदर्शन कर सकती है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने वीडियो संदेश में निवर्तमान और वर्तमान दोनों ही कार्यकारिणी को शुभकामना देते हुए, नए कीर्तिमान स्थापित करने की शुभकामना प्रदान की।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष छवि बैंगानी ने नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएँ देते हुए टीपीएफ द्वारा किए जा रहे समाज उपयोगी कार्यक्रम से सभा को अवगत कराया। सदस्यता अभियान के अंतर्गत नॉर्थ जोन व दिल्ली से फेलो/पैटर्न मेंबर बनाने पर जोर दिया। साथ ही शिक्षा सहयोग, उड़ान प्रोजेक्ट, एटीएम वैन हेतु सहयोग की अपील की।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध उद्योगपति सज्जन जैन, फरीदाबाद ने अपना शुभकामना संदेश प्रदान किया।

कार्यक्रम में विशेष उपस्थित टीपीएफ गौरव संपतमल नाहटा, राष्ट्रीय ट्रस्टी व उद्योगपति पुष्प जैन पटावरी, मेंबरशिप कन्वेनर पूर्वी जैन, राष्ट्रीय मीडिया संयोजक कमल सेठिया, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सुनील भंसाली, पूर्व अध्यक्ष विजय चोपड़ा, दिल्ली महासभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, मंत्री प्रमोद घोड़ावत, फरीदाबाद सभा अध्यक्ष गुलाब चंद बैद, मंत्री संजीव बैद, सहित नॉर्थ जोन की ६ शाखाओं की कार्यकारिणी टीम भी उपस्थित थी।

नॉर्थ जोन की भिवानी, दिल्ली, फरीदाबाद, गाजियाबाद, गुरुग्राम, नोएडा, पंचकूला, जींद के पदाधिकारियों का शाखा किट के माध्यम से सम्मान व स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में सभी उपस्थित समाज ने नेटवर्किंग कार्यक्रम का आनंद लिया, उन्होंने न केवल अपने ज्ञान में वृद्धि की, साथ ही आपस में अपने फोन नंबर भी साझा किए। कार्यक्रम में विजेताओं को सम्मानित किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह के कार्यक्रम का संचालन नॉर्थ जोन मंत्री भरत बेगवानी, दिल्ली मंत्री कविता बरड़िया, सहमंत्री अंकुर जैन, सहमंत्री प्रीति तातेड़ ने किया। जूम मीटिंग का संचालन नोएडा अध्यक्ष प्रसन्न सुराणा व सहमंत्री शेखर बोथरा ने किया। आभार ज्ञापन जोनल उपाध्यक्ष अनुराग जैन ने किया।

इस अवसर पर सभी ने टीपीएफ नॉर्थ जोन की नई टीम को उनके उज्ज्वल कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ दी। शपथ ग्रहण समारोह के कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों का विशेष श्रम रहा।

मनुष्य भव का उपयोग केवल धन संपदा नहीं धर्म संपदा बढ़ाने में करें

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी ने वाटर हिल्स रेजिडेंसी वेसू में धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य भव दुर्लभ है। अनेकों भवों की पुण्याई का उदय होता है तब मनुष्य भव मिलता है। एक बार मनुष्य भव प्राप्त होने के बाद पुनः कब मनुष्य भव प्राप्त होगा यह कुछ निश्चित नहीं है। मनुष्य भव ही एक ऐसा भव है, जिसमें व्यक्ति पूर्व संचित कर्मों का क्षय कर सकता है। अतः मनुष्य भव में जो समय मिला है वह अमूल्य है उसका सदुपयोग करना चाहिए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि भगवान महावीर का यह कथन अति मूल्यवान है। इसका अर्थ है जो क्षण को पहचानता है वह पंडित है। वास्तव में जो वर्षों तक विद्याभ्यास करता है, बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त कर लेता है वह पंडित नहीं है लेकिन जो समय का मूल्य समझकर उसका सदुपयोग कर लेता है वह पंडित है, समझदार है।

मुनिश्री ने कहा कि तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं—प्रथम प्रकार के मनुष्य वे होते हैं जो गलत रास्ते पर जाकर अपनी धन-संपदा को बर्बाद कर देते हैं। दूसरे प्रकार के मनुष्य अपनी धन-संपदा जितनी है उसे सुरक्षित रखते हैं। न कम करते हैं न बढ़ाते हैं। तीसरे मनुष्य होते हैं जो अपनी धन-संपदा को अपने पुरुषार्थ से अनेक गुना बढ़ा देते हैं। इनमें से जो मनुष्य अपनी धन-संपदा में वृद्धि कर लेते हैं उसे समझदार मनुष्य माना जाता है। उसी प्रकार धर्म-संपदा में भी जो व्यक्ति त्याग-तपस्या, सेवा-सत्संग, स्वाध्याय द्वारा अपनी धर्म संपदा को वृद्धिंगत कर लेते हैं उन्हें समझदार मनुष्य माना जाता है।

✦ *व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

जैन दीक्षार्थी मुमुक्षु दक्ष नखत का अभिनंदन समारोह

सरदारपुरा।

सरदारपुरा स्थित मेघराज तातेड़ भवन में शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी का अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने स्वागत वक्तव्य दिया।

तत्पश्चात टीपीएफ अध्यक्ष नरेश सिंघवी ने मुमुक्षु दक्ष नखत का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेमम सरिता कांकरिया, सरिता तातेड़, मोनिका चोरड़िया ने अपने गीतों द्वारा भावों की प्रस्तुति दी।

तेयुप, सरदारपुरा द्वारा गीतिका के द्वारा दीक्षार्थी भाई के भावी जीवन के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया और साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि व्यक्ति के चारित्र मोहनीय कर्म और अंतराय कर्म का क्षयोपशम होने पर दीक्षा की भावना बनती है और दीक्षा के साथ पारिवारिक जनों का सहयोग अपेक्षित है। दीक्षार्थी भाई के भावी जीवन के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

कार्यक्रम का संचालन सभा उपाध्यक्ष विनय तातेड़ ने किया।

साध्वीवृंद का स्वागत समारोह

कानपुर।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी का विहार कानपुर से मध्य प्रदेश की ओर सानंद चल रहा है। साध्वीवृंद का वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के नगर झाँसी में पदार्पण हुआ। इस उपलक्ष्य में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने साध्वीवृंद का भव्य स्वागत किया। पंक्तिबद्ध विद्यार्थियों ने पूज्य गुरुदेव के नारों से संपूर्ण विद्यालय परिसर को गुंजायमान कर दिया।

एक संक्षिप्त समारोह में साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने सभी विद्यार्थियों को असत्य न बोलने, क्रोध न करने तथा नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प कराए। विद्यालय के शिक्षकगण को भी साध्वीश्री जी ने विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा प्रदान करने की प्रेरणा दी।

साध्वीश्री जी ने बच्चों को देश का उज्ज्वल भविष्य बताते हुए कहा कि देश का सर्वांगीण विकास और राष्ट्रीय निर्माण अच्छी शिक्षा तथा अच्छे आचरण से ही संभव है। उपस्थित श्रोतागण ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। इस समारोह में कानपुर सभा मंत्री संदीप जम्मड़ तथा अंशु जम्मड़ उपस्थित थे।

पंजाब स्तरीय युवा सम्मेलन का आयोजन

धर्म का काम है आंतरिक व्यक्तित्व का विकास

चंडीगढ़।

धर्म का काम है आंतरिक व्यक्तित्व का विकास। इसके लिए मस्तिष्क और हृदय को सुंदर बनाना अपेक्षित है, जो सद्विचार और सदाचार के विकास से ही संभव है। सभी अपने संस्कार विकसित करें, दोष-दुर्गुणों को कम करें और सद्गुणों को अपनाना सीखें। सत्य, दया, क्षमा, परोपकार और सत्संगति रूपी गुण ऐसे साधन हैं, जिनसे हमारे संस्कार विकसित होते हैं। यह विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जहाँ चरित्र नहीं है वहाँ कुछ भी टिक पाना मुश्किल है। जीवन का सबसे बड़ा पाठ चरित्र है। जीवन यानी संघर्ष, यानी ताकत, यानी मनोबल। मनोबल से ही व्यक्ति स्वयं को बनाए रख सकता है।

मुनिश्री ने अंत में कहा कि चरित्र यानी हमारा आंतरिक व्यक्तित्व-एक पवित्र आभामंडल है। यह सही है कि शक्ति और सौंदर्य का समुचित योग ही हमारा व्यक्तित्व है, पर शक्ति और सौंदर्य आंतरिक भी होते हैं, बाह्य भी होते हैं। चरित्र निर्माण से ही जहाँ आपके व्यक्तित्व का निर्माण होता है, वहीं अच्छे-अनुकरणीय चरित्र वाले लोगों से ही देश का निर्माण होता है।

ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन

जींद।

तेरापंथ सभा भवन, जींद में हरियाणा प्रांतीय सभा द्वारा आयोजित ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ तथा जैन इतिहास से संबंधित प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता में बहुत से भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता में निरीक्षक की भूमिका तेरापंथ सभा, जींद के मंत्री नारायण सिंह रोहिल्ला तथा प्रेस प्रवक्ता नरेश जैन ने निभाई।

✦ *किए हुए पाप का फल अवश्य मिलता है—यह मान कर चलो और पाप-कार्यों से बचो।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

५ आश्रमों में उल्लेखनीय अन्नदान सेवा कार्य

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेयुप के त्रिआयामी कार्यक्रम सेवा, संस्कार, संगठन के अंतर्गत तेयुप, राजराजेश्वरी नगर द्वारा ५ आश्रमों में अन्नदान सेवा कार्य अध्यक्ष कौशल लोढ़ा की अध्यक्षता में संपन्न किया गया। नमस्कार महामंत्र का उच्चारण द्वारा अन्नदान का कार्यक्रम शुरू किया तथा सभी बच्चों एवं वृद्धों को जैन धर्म की जानकारी प्रदान की। तेयुप, राजराजेश्वरी नगर के तत्त्वावधान में ४ अनाथ आश्रम एवं १ वृद्ध आश्रम में बच्चों, वृद्धों तथा उनकी देख-रेख करने वाले व्यक्तियों को अल्पाहार कराया गया एवं जरूरत की राशन की सामग्री भी उपलब्ध कराई गई।

कार्यक्रम के प्रायोजक हनुमानमल, संजय कुमार, नोखा, बैंगलोर रहे। तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने प्रायोजक परिवार के प्रति धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया।

तेयुप मंत्री विपुल पितलिया ने बताया कि ऐसा प्रथम बार हुआ कि एक ही दिन में एक ही समय में परिषद के द्वारा ५ स्थानों पर अन्नदान सेवा कार्य किया गया हो। इस कार्य में तेयुप राजराजेश्वरी नगर के संस्थापक अध्यक्ष राजेश भंसाली, अभातेयुप से तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी, तेयुप पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य एवं सेवा कार्य के प्रभारी और सहप्रभारी की उपस्थिति रही।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में साध्वीश्री जी का पदार्पण

विजयनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर आरपीसी लेआउट एवं आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल आरपीसी लेआउट में साध्वी गवेषणाश्री जी का पदार्पण हुआ। साध्वीश्री जी ने एटीडीसी का अवलोकन किया और मंगलपाठ सुनाया।

अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने स्थायी उपक्रम एवं गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी। टीपीएफ उपाध्यक्ष हिम्मत मांडोत एवं विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी उपस्थित थे। साथ में मंत्री राकेश पोखरना, संगठन मंत्री कुलदीप बागरेचा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही। टी-दासरहल्ली, तेयुप के अध्यक्ष दिलीप पोखरना और उनकी टीम उपस्थित रही।

प्रेक्षाध्यान पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन

शाहीबाग, अहमदाबाद।

प्रेक्षावाहिनी द्वारा प्रेक्षाध्यान का विशेष कार्यक्रम 'दीर्घ श्वास प्रेक्षा' से कषाय मुक्ति की ओर अग्रसर प्रेक्षावाहिनी, शाहीबाग, अहमदाबाद व तेरापंथ सेवा समाज द्वारा ध्यान-कक्ष में प्रेक्षाध्यान का विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंगलाचरण प्रेक्षा गीत का संगान व त्रिपदी वंदना प्रेक्षा प्रशिक्षक धर्मेंद्र कोठारी ने किया।

प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग व महत्त्व बताते हुए कहा कि दीर्घ श्वास प्रेक्षा से ज्ञाता दृष्टा भाव का विकास होता है, जो कषाय मुक्ति की ओर अग्रसर करता है। आवश्यकता इस बात की है कि दीर्घश्वास प्रेक्षा प्रतिदिन जीवन की नियमित प्रयोगशाला बने। जवेरीलाल संकलेचा ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। मंगलभावना धनराज छाजेड़ ने करवाई।

आभार, सूचना व कार्यक्रम का संचालन जवेरीलाल संकलेचा ने किया।

भिक्षु धम्म जागरणा का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य भिक्षु की स्तुति में तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता अपनी भजन मंडली पूर्वांचल स्वर लहरी के साथ प्रत्येक माह की सुदी तेरस को भिक्षु धम्म जागरणा का आयोजन करती है। इसी क्रम में तेयुप ने अपनी भजन मंडली पूर्वांचल स्वर लहरी के साथ धम्म जागरणा का आयोजन पूर्वांचल तेयुप कार्यालय एटीडीसी में किया गया।

मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। स्वर लहरी के गायक हेमंत बैद व धीरज मालू ने महामना भिक्षु को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में अध्यक्ष राजीव जैन, पूर्व उपाध्यक्ष धर्मेंद्र बुच्चा ने भी भिक्षु स्वामी को अपनी श्रद्धा भक्ति प्रस्तुत की। कार्यसमिति सदस्य एवं स्वर लहरी के संयोजक काशीष लिंगा भी उपस्थित थे। सभी ने मिलकर भिक्षु स्वामी के गीतों का संगान कर महामना भिक्षु स्वामी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

विशिष्ट सेवाओं के लिए सदस्यों का सम्मान

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथी सभा ट्रस्ट बोर्ड साहूकारपेट की पंचम कार्यसमिति बैठक तेरापंथ सभा भवन में हुई। नमस्कार महामंत्र से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ हुई। प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़ ने स्वागत प्रस्तुत किया। मंत्री राजेंद्र भंडारी ने समायोजित एवं आगामी कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

ट्रस्ट बोर्ड द्वारा ट्रस्ट बोर्ड के सदस्य जो केंद्रीय एवं स्थानीय स्तर पर तेरापंथ धर्मसंघ की संस्थाओं में अपना योगदान देकर चेन्नई समाज और ट्रस्ट बोर्ड का नाम रोशन कर रहे हैं, वैसे सदस्यों का सम्मान किया गया।

जैन विश्व भारती के अध्यक्षीय दायित्व निभा रहे अमरचंद लुंकड़, संयुक्त मंत्री विमल चिप्पड़, जैविभा के आर्बिट्रेटर गौतमचंद सेठिया, आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल माधावरम के चेयरमैन तनसुखलाल नाहर, मंत्री सुरेश कुमार नाहर आदि विशिष्ट महानुभावों का साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड द्वारा अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर ट्रस्ट बोर्ड के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़, मंत्री राजेंद्र भंडारी, कोषाध्यक्ष अनिल लुणावत, सहमंत्री गौतमचंद धारीवाल, संरक्षक इंदरचंद डूंगरवाल, ट्रस्टी चंद्रेश चिप्पड़, विनोद डागा, भवन व्यवस्थापक विनोद डांगरा, नरेंद्र भंडारी, गौतम आच्छा आदि पदाधिकारीगण, सदस्यों की उपस्थिति रही।

साध्वीवृंद का आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

चलथान।

शासनश्री साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी सुषमाकुमारी जी, शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धिश्री जी इन चार ग्रुप के १८ साध्वियों का चलथान में आध्यात्मिक संत मिलन हुआ।

शासनश्री साध्वी जिनप्रभा जी ने इस अवसर पर कहा कि हम लाडनूं (राजस्थान) से पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर मंगल पाठ सुनकर रवाना हुए तब से अब तक प्रतिदिन लगभग २५ किलोमीटर की पदयात्रा होती रही है। हम निर्धारित समय सीमा के अंदर चलथान तक पहुँच गए हैं और निर्धारित समय सीमा के अंदर मुंबई पहुँचने का हमारा लक्ष्य है। जग गुरु कृपा प्राप्त होती है गुरुदृष्टि मिलती है तो असंभव भी संभव बन जाता है। अनन्य कृपा दृष्टि के लिए हम पूज्य गुरुदेव के प्रति अनंत-अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि शासनश्री साध्वी जिनप्रभा जी वर्षों से पूज्य गुरुदेव की निश्रा में सेवारत हैं। आप अत्यंत विदूषी एवं तत्त्वज्ञ साध्वीश्री हैं। कुशल लेखिका हैं। साध्वी सुषमा कुमारी जी भी राज के साध्वी हैं।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की आपने बहुत ही समर्पित व आत्मीय भाव से सेवा की है। शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञा जी भी गुरुदृष्टि की सतत आराधना करते हुए गुरु चरणों में सेवारत हैं। मैं आप सभी का स्वागत करते हुए अत्यंत आनंद की अनुभूति करती हूँ। साध्वी सुषमाश्री जी, साध्वी लब्धिश्री जी एवं अन्य सहवर्ती साध्वीश्री जी द्वारा मंगल गीत प्रस्तुत किए।

तेरापंथ सभा, चलथान के पूर्व मंत्री सुरेश पितलिया ने स्वागत वक्तव्य में सभी साध्वीगण का स्वागत किया। पूर्व अध्यक्ष तेजमल नौलखा, अभातेममं के ट्रस्टी कनक बरमेचा, अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, उधना भजन मंडली, चलथान महिला मंज्ञल की बहनों एवं महिमा चोरड़िया आदि ने भावों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय सहमंत्री अनिल चंडालिया, संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया, उपसभा प्रभारी लक्ष्मीलाल बाफना, फूलचंद छत्रावत एवं परिपार्श्ववर्ती क्षेत्रों के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप पूर्व अध्यक्ष ज्ञानचंद दुगड़ ने किया।

ज्ञानशाला की सार-संभाल

उत्तर-कोलकाता।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के आशीर्वाद व ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया के अभिनव चिंतन से उत्तर-कोलकाता बिनायक एन्क्लेव ज्ञानशाला की सार-संभाल और निरीक्षण हेतु उत्तर कोलकाता सभा द्वारा वृहद् कोलकाता ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, सह-संयोजक संजय पारख, समिति सदस्य मालचंद भंसाली उपनगर क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत, साउथ कोलकाता क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश दुगड़, सह-संयोजिका निधि कोचर, उत्तर कोलकाता सभा के अध्यक्ष विनोद बैद, मंत्री हेमराज संचेती व प्रशिक्षिकाएँ, अभिभावक एवं ८ ज्ञानार्थी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से हुआ। प्रारूप के अनुसार गुरु वंदना, ज्ञानशाला गीत, प्रतिज्ञा आदि करवाए गए। अध्यक्ष और मंत्री ने सभी का स्वागत किया एवं ज्ञानशाला के बारे में विचार व्यक्त किए। ज्ञानार्थी देवांश बैद ने संगठन में एकता पर कहानी सुनाई। प्रशिक्षिकाओं ने आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

रामापुरम (तमिलनाडु)।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी, साहुकारपेट, चेन्नई का चातुर्मास संपन्न कर आंध्रप्रदेश की ओर विहाररत हैं।

साध्वीश्री जी सुविधिनाथ जिनालय जैन भवन, रामपुरम पधारे। वहाँ पर मूर्तिपूजक संप्रदाय के आचार्यश्री नित्यानंदजी महाराज की साध्वी हर्षितप्रज्ञा जी और साध्वी दर्शनप्रज्ञा जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वी हर्षितप्रज्ञा जी और साध्वी दर्शनप्रज्ञा जी ने जैन भवन में पधारने पर अगवानी कर आपका स्वागत किया। दोनों ओर से एक-दूसरे को सुखसाता पूछ, अभिवादन हुआ। दोनों ओर से भगवान महावीर एवं जैन सिद्धांतों के समन्वय, अनेकांत की चर्चा की।

इस विहार यात्रा में तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड, विहार सेवा प्रभारी गणपतराज डागा, सुरेश रांका, गजेंद्र खांटेड इत्यादि के साथ अनेकों तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप के श्रावक-श्राविकाएँ अपना दायित्व निर्वहन कर रहे हैं।

चित्त में संयम साधना की भावना रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

खैरवा, १३ दिसंबर, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी १२ किलोमीटर का विहार कर खैरवा पधारे। मंगल प्रवचन में प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमें मानव जीवन प्राप्त है और ८४ लाख जीव योनियों में मनुष्य जन्म बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

संज्ञी मनुष्य के मन होता है। ये चित्त और मन बदलता रहता है। भाव भी बदल जाते हैं। कभी यह शांत, ऋजु और संतोष में रहता है, तो कभी ये गुस्सा, वक्र और लोभ में भी परिवर्तित हो जाता है। भीतर में अहिंसा, अच्छाई का बीज भीतर में होता है, तो हिंसा और बुराई के संस्कार भी भीतर में होते हैं। मन कभी सद्भावना में रहता है, तो दुर्भाव में भी चला जाता है।

आदमी को चाहिए कि हिंसा के संस्कार कमजोर पड़ें, अहिंसा के संस्कार उजागर हों। बुराईयाँ छूटे, अच्छाईयाँ जीवन में आएँ। दुर्भाव की दुर्गति हो, सद्भावना और सद्गति के भाव उजागर हो जाएँ। असद् से सद् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृत्व की ओर प्रस्थान धर्म की साधना के द्वारा हो सकता है। संत पुरुष जो धर्म का प्रकाश फैलाने वाले होते हैं।

आज हम खैरवा आए हैं, जो परम पूजनीय आचार्य भिक्षु की कर्मभूमि रहा है। तेरापंथ का पुराना श्रद्धा का क्षेत्र है। यहाँ उनके अनेक चातुर्मास हुए हैं। समय-समय की बातें हैं। आचार्य भिक्षु ने ग्रंथों के माध्यम से बहुत ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया था।

संत तो शांति और सद्भावना में रहें। चित्त दुश्चित्त बन सकता है तो सुचित्त भी बन सकता है। चित्त में संयम-साधना की भावना रहे। आचार्य भिक्षु ने लंबा जीवन जीया था। वे कितना परिश्रम करते थे। उनका अपना बौद्धिक बल और श्रद्धा का बल था। वे आचार कुशल थे। एक व्यक्तित्व में कितनी बातें थीं। खैरवा क्षेत्र तो खैर का खूँटा है।

खैरवा में सद्भावना, अहिंसा, नैतिकता और नशामुक्ति गाँव के लोगों में रहे। सबमें शांति रहे। यहाँ के लोगों के प्रति मंगलकामना है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि महान व्यक्तियों की सन्निधि दुर्लभ होती है। मनुष्य जन्म दुर्लभ है, तो उससे दुर्लभ है महान व्यक्तियों का संग-सान्निध्य। बिरले लोग होते हैं, जिन्हें महान व्यक्तियों का सान्निध्य उपलब्ध होता है। आचार्यप्रवर जहाँ पधारते हैं, वहाँ के लोगों के घर खुल जाते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में पारसमल खांटेड़, तेमम गीत, दलपत कोठारी, शैतान सिंह ने अपनी भावना रखी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

केवल मानव जीवन में ही कर सकते हैं आत्मा से परमात्मा बनने की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

सोनाई मांजी, १४ दिसंबर, २०२२

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १० किलोमीटर का विहार कर सोनाई मांजी के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। पूज्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमें मनुष्य जीवन प्राप्त है। ८४ लाख जीव योनियों में यह एक दुर्लभ जन्म होता है और हमें वह वर्तमान में प्राप्त है।

इस मानव जीवन में साधना करके जीव आत्मा से परमात्मा बन सकता है और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इस मानव जीवन को पाकर अगर पापों में लगा दिया जाए तो आदमी इस मानव जीवन के बाद नरक में ही जा सकता है। आदमी ध्यान दे कि मेरा यह जीवन भी अच्छा रहे और मैं आगे भी अच्छा रह सकूँ।

जीवन जीने के तरीके में अहिंसा, संयम और तप हो तो जीवन की शैली और जीवन बढ़िया हो सकता है। बुद्धिमान का जीवन काव्यशास्त्र के विनोद में बीतता है। जो मूर्ख है, उनका जीवन व्यसनों में, नींद में या लड़ाई-झगड़ों में बीतता है। जीवन अच्छे धर्म कार्यों में, सत्-कार्यों में लगे ऐसा हमारा प्रयास हो। इस बहुमूल्य जीवन को खोने वाले को पश्चात्ताप करना पड़ सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि जो सोता है, वो खोता है, जो जागता है, वह प्राप्त करता है। मौके का लाभ उठाना चाहिए।

आदमी सबके साथ सद्भाव, मैत्री भाव रखे एवं धार्मिक काम करे, ताकि हमारी चेतना बढ़ सके। विद्यालय में किताबी ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भरने का प्रयास रहे। भारत के पास ग्रंथ, संप्रदाय व संत संपदा है, तो पंथ भी है। शिक्षक ज्ञानदाता होते हैं, साथ में धर्म के अच्छे संस्कार भी दें। बच्चे अच्छे होंगे तो देश भी अच्छा बनेगा।

राजनीति भी सेवा का एक माध्यम है। भारत की आत्मा गाँवों में रहती है। आदमी का तन-मन अच्छा रहे। सादा जीवन उच्च विचार, मानव जीवन का शृंगार। आदमी के आचार, विचार और संस्कार शुद्ध रहें। हमारे जीवन में आध्यात्मिक संपदाएँ हों, जिनसे हमारा कल्याण हो सके।

पूज्यप्रवर ने विद्यार्थियों एवं ग्रामवासियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए। पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय के प्रिंसिपल शिवराम पाली के पूर्व सांसद, पुष्प जैन, सुमेरपुर के पूर्व विधायक सुमेरपुर मदन राठौड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय के प्रिंसिपल का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शरीर को बनाएँ धर्म की साधना करने का....

(पृष्ठ १२ का शेष)

गृहस्थ भी श्रमणोपासक होता है, वह भी धर्म की साधना इस शरीर से करते हैं। स्वाध्याय-ध्यान या तप जो भी धार्मिक क्रिया होती है, वह शरीर से होती है, इसलिए देह भी स्वस्थ और सक्षम रहे। अक्षम है, लंबी उम्र है, वह क्या काम का वह तो परवश रहता है। परवशता से तो अच्छा है कि वह संलेखना-संथारा करे।

शरीर से जब तक लाभ मिलता हो शरीर का संरक्षण करे। साधु को जब लगे शरीर अक्षम हो रहा है, तो तपस्या-संलेखना करे। स्वावलंबन में जीना अच्छा है। परावलंबिता में लंबा जीना संभवतः बढ़िया बात नहीं लगती।

साधु ने इस देह को इसलिए धारण कर रखा है कि उसे मोक्ष की साधना करनी है, उसका हेतु ये शरीर रहे, इसलिए इसे साधु पोषण दें। पर खाने में भी संयम हो। स्वाद के लिए ज्यादा नहीं खाना चाहिए। खाना साधना करने के लिए शरीर को भाड़ा देने के लिए है। जीवन भोजन के लिए नहीं है, भोजन जीवन टिकाने के लिए है। खाकर खराब नहीं होना चाहिए।

भोजन में विवेक हो, संयम हो। भोजन साधना और शरीर के अनुकूल हो। गृहस्थ भी यह ध्यान रखें। रात्रि भोजन गृहस्थ संभव हो सके तो टालने का प्रयास करें। आदमी बुरा काम करे इसकी अपेक्षा तो नींद लेना ठीक है। उम्र के बाद तो और खाने का ध्यान दें। उम्र आने के बाद खान-पान में सावधान हो जाएँ। आनंद वाटिका से आनंद कवाड़ एवं शोभा कटारिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 दिसंबर, 22-1 जनवरी, 23

✦ *जिन्हें वाणी की शक्ति प्राप्त है, वे उसका दुरुपयोग न करें। अपितु उचित, मधुर और यथार्थ भाषा में उसका प्रयोग करें।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

पाली की पावन धरा पर वृहद दीक्षा संस्कार का आयोजन

अध्यात्म और सन्मार्ग पर चलकर बनाएँ अपनी आत्मा को अपना मित्र : आचार्यश्री महाश्रमण

पाली मारवाड़, १५ दिसंबर, २०२२

पाली जो वस्त्र नगरी कहलाती है। यहाँ रंगाई-छपाई का काम विशेष होता है। पाली बहुत पुरानी व्यवस्था नगरी रही है। पाली हमारे परम पावन आचार्य भिक्षु और श्रावक विजयचंद पटवा से भी जुड़ी है। आचार्य भिक्षु के चातुर्मास संबंधी अनेक घटना प्रसंग पाली से जुड़े हैं।

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग ६ किलोमीटर का विहार कर पावन एवं धार्मिक नगरी पाली पधारे हैं। मुख्य प्रवचन में महामनीषी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में मित्र भी होते हैं, मित्र बनाए जा सकते हैं। शास्त्रकार ने एक गहरी बात कही कि हे पुरुष! तुम ही अपने मित्र हो, फिर बाहर क्या मित्र खोज रहे हो?

एक अध्यात्म के परिपल्य में और निश्चय नय के संदर्भ में हमें यह बात बहुत ठीक लग रही है कि अपनी आत्मा ही अपना मित्र है। आत्मा ही अपना मित्र, शत्रु, बंधु और रिपु है।

हमारी आत्मा सुप्रतिष्ठित है, सत्प्रवृत्ति में संलग्न होती है, तब हमारी आत्मा हमारी मित्र बन जाती है। आत्मा जब दुष्प्रवृत्ति में संलग्न हो जाती है, तो हमारी ही आत्मा हमारा दुश्मन भी बन जाती है। आत्मा अहिंसा में संलग्न है, तो हमारी मित्र है और आत्मा हिंसा में प्रवृत्त है तो वही आत्मा हमारा दुश्मन बनती है।

जैन शासन में नमस्कार महामंत्र एक भक्ति का मंत्र है। पंच परमेष्ठी को वंदन

करना अपनी आत्मा को मित्र बनाना है। नमो शब्द अहंकार पर चोट करने वाला होता है। आत्मा अहंकार मुक्त, ऋजु-सरल स्वभाव, संतोष में, धर्म में स्थित रहे। अध्यात्म और सन्मार्ग पर चलने वाला अपनी आत्मा का मित्र बन सकता है।

पाली में तो आचार्य भिक्षु ने सात चातुर्मास किए थे। उत्तरवर्ती आचार्यों ने भी चातुर्मास किए हैं। आचार्य तुलसी के सन् १९९० के पाली चातुर्मास में मैं भी गुरुदेव के साथ था। पाली को पावन धरा कहा गया है। यहाँ हमारे धर्माचार्यों ने २१ चातुर्मास कर दिए हैं।

बड़ी दीक्षा का संस्कार—छेदोपस्थापनीय चारित्र प्रदान सिरियारी में ८ दिसंबर को सात मुमुक्षुओं की दीक्षा हुई थी। उनकी आज चरम संयम-प्रदाता द्वारा बड़ी दीक्षा का आयोजन हुआ। पूज्यप्रवर ने पाँच महाव्रतों एवं रात्रि भोजन विरमण व्रत को खोलकर समझाया व स्वीकार कराते हुए उनमें स्थापित किया। अतीत की आलोचना करवाई। अब इनके साथ आहार का पूरा संबंध हो गया है।

तीन चीजें हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। पूज्यप्रवर ने इनको विस्तार से समझाया। पूज्यप्रवर ने इन तीन प्रतिज्ञाओं के संकल्प स्थानीय जैन-अजैन सभी को स्वीकार करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यश्री ने कहा है कि रात्रि की शोभा चंद्रमा से, दीपक की शोभा तेजस्विता से, सरोवर की शोभा कमल से, दिन की शोभा सूर्य से, राजा की शोभा धृति से और व्यक्ति की शोभा दान से नहीं, व्यक्तित्व से होती है। इस लोक की शोभा सद्गुरु से होती है। पाली में सद्गुरु के रूप में व्यक्तित्व संपन्न महापुरुष पधारे हैं। इनके समागमन से सारा वातावरण बदल गया है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सभाध्यक्ष सुरेंद्र सालेचा, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, विधायक ज्ञान पारख ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर से अलग-अलग संकल्प लिखित रूप में स्वीकार किए। आज कई बहिर्विहारी चारित्रात्माओं ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल पर रात्रि में स्थानीय अनेक सभा-संस्थाओं द्वारा नागरिक अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शरीर को बनाएँ धर्म की साधना करने का साधन : आचार्यश्री महाश्रमण

आनंद वाटिका, १७ दिसंबर, २०२२

जन-जन के तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १५ किलोमीटर का विहार कर खारड़ा स्थित आनंद वाटिका पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि एक प्रश्न होता है कि इस शरीर को टिकाए रखने के लिए हमें कितना परिश्रम करना पड़ता है। इस शरीर को हम धारण करने व टिकाए रखने का क्यों प्रयास करें, कारण अमर तो कोई रह नहीं सकता।

इस संदर्भ में जैन शास्त्र में एक बात बताई गई कि पूर्व अर्जित पाप-कर्मों का क्षय करने के लिए इस शरीर को धारण करें। क्योंकि यह शरीर धर्म की साधना का माध्यम है। शरीर रहेगा तो हम धर्म-ध्यान कर सकेंगे। साधु का शरीर अच्छा है, तो धर्म प्रचार अच्छा कर सकते हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मुनि शांति कुमार जी का देवलोकगमन

गंगाशहर।

सेवाभावी मुनि शांति कुमार जी का गंगाशहर में १३ दिसंबर, २०२२, मंगलवार को देवलोकगमन हो गया। इनका जन्म सुजानगढ़ में नाहटा परिवार में संवत् २००५ आश्विन शुक्ला-६ को हुआ। इनके पिता का नाम गोरुलाल एवं माता का नाम जड़ाव देवी था।

वैराग्य उत्पत्ति के पश्चात ५ महीने पारमार्थिक शिक्षा संस्थान में अध्ययन हेतु रहे। १८ वर्ष की वय में ४ मार्च, १९६७ को आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से सुजानगढ़ में दीक्षित हुए। दीक्षित होने के पश्चात गुरुकुलवास में सेवाभावी मुनि चंपालाल जी, मुनि महेंद्र कुमार जी, मुनि सागरमल जी, मुनि डूंगरमल जी आदि के साथ विचरण किया।

मुनि शांति कुमार जी सन् १९९५ से बीकानेर, गंगाशहर, भीनासर में विचरण कर रहे थे। वरिष्ठ मुनियों की सेवा की बदौलत उन्हें सेवाभावी मुनि की उपाधि से नवाजा गया।

२७ साल तक एक ही चोखले में प्रवास करते हुए मुनिश्री ने श्रावकों की अच्छी सार-संभाल की। असाध्य बीमारी से ग्रसित होने के पश्चात १३ दिसंबर को दोपहर में मुनिश्री के स्वास्थ्य में गिरावट के पश्चात सहयोगी मुनि विमल बिहारी जी एवं मुनि श्रेयांस कुमार जी श्रावकों के सहयोग से हॉस्पिटल ले गए जहाँ रात्रि में ९:१५ बजे मुनिश्री ने देह का त्याग कर दिया।

देवलोकगमन की सूचना मिलने के साथ जैन धर्म के लोग तेरापंथ भवन पहुँच गए। १४ दिसंबर को ९:३० बजे जैन परंपरा के अनुसार परिजनों की उपस्थिति में अंतिम संस्कार किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**